

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ
يَخْتَلِفُونَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ
هُوَ كَذِيبٌ كَفَّارٌ

(सूर: जुमर:4)

अनुवाद : निश्चय ही अल्लाह उनके बीच
फैसला कर देगा जिन बातों में वे मतभेद
किया करते थे। निश्चय ही अल्लाह उस
व्यक्ति को मार्गदर्शन नहीं देता जो झूठा
(और) कठोर कृतघ्न हो।

वर्ष- 10

अंक - 42

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ



संपादक

शेख मुजाहिद

अहमद

उप संपादक

सय्यद मुहियुद्दीन

फ़रीद

अखबार-ए-अहमदिया

रुहानी खलीफ़ा इमाम जमाअत
अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर
अहमद साहिब खलीफ़तुल मसीह
ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला
बिनसिहिल अज़ीज सकुशल हैं।
अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह
तआला हुज़ूर को सेहत तथा
सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण
आप पर अपना फ़जल नाज़िल
करता रहे। आमीन

23 रबीउल सानी, 1446-47 हिज़्री कमरी, 16 इखा 1404 हिज़्री शम्सी, 16 अक्टूबर 2025 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन व्यक्ति जिनसे अल्लाह
क्रयामत(प्रलय) के दिन झगाड़ा करेगा

(2227) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हो) से
रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया
कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: तीन प्रकार के व्यक्ति ऐसे हैं
जिनसे क्रयामत के दिन मैं विवाद करूँगा। एक वह व्यक्ति
जिसने मेरा नाम लेकर किसी से वचनबद्धता की और फिर
विश्वासघात किया। दूसरा वह व्यक्ति जिसने किसी स्वतंत्र
व्यक्ति को बेचकर उसकी कीमत खाई। तीसरा वह व्यक्ति
जिसने मज़दूर को मज़दूरी पर रखा और उससे पूरा काम लिया
किंतु उसकी मज़दूरी उसे नहीं दी।

कौन सा पड़ोसी अधिक अधिकार रखता है

(2259) हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हो) से
रिवायत है कि उन्होंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! मेरे दो
पड़ोसी हैं, उन दोनों में से मैं किसे उपहार भेजूँ? आप
(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: उन दोनों में से
जिसका दरवाज़ा तुमसे अधिक निकट है।

कार्य की इच्छा रखने वाले या पद माँगने वाले

(2261) हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु
अन्हो) से रिवायत है कि मैं (यमन से) नबी (सल्लल्लाहो
अलैहि व सल्लम) के पास उपस्थित हुआ और मेरे साथ
अशअर कबीले के दो व्यक्ति थे (जो किसी सेवा के इच्छुक थे,
उन्होंने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से इसकी प्रार्थना
की)। मैंने निवेदन किया: मुझे ज्ञान नहीं था कि ये दोनों कार्य
की इच्छा रखते हैं। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने
फ़रमाया: हम ऐसे लोगों को अपने कार्य पर नहीं लगाते जो
उसकी इच्छा रखते हों। (वर्णनकर्ता कहता है कि नबी
(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने बोलते हुए) "लन
नस्तअमिल" फ़रमाया या "ला नस्तअमिल" फ़रमाया।

(बुखारी, खंड 4, संस्करण 2008 ई., कादियान)

चाहिए कि हम रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की भविष्यवाणियों का सम्मान और आदर करें
और उनके प्रति उदासीन न हों अन्यथा यह एक महापाप होगा।

हम आँहज़रत रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के प्रत्येक शब्द और प्रत्येक अक्षर का आदर करते हैं।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मसीह मौऊद की खातिर नमाज़ें एकल (जमा) किए जाने की भविष्यवाणी

"और जैसा कि खुदा तआला के अनिवार्य कर्तव्यों का पालन किया जाता है। वैसा ही उसकी छूटों का भी पालन
करना चाहिए। अनिवार्य कर्तव्य भी खुदा तआला की ओर से हैं और छूट भी खुदा तआला की ओर से।
देखो हम भी छूटों का पालन करते हैं। नमाज़ों को एकल करते हुए लगभग दो महीने से अधिक हो गए हैं। बीमारी
के कारण और सूरह फातिहा की व्याख्या लिखने में अत्यधिक व्यस्तता के कारण ऐसा हो रहा है और इन नमाज़ों के एकल
करने में "तुजमऊ लहुस्सलात" की हदीस भी पूरी हो रही है कि मसीह की खातिर नमाज़ें एकल की जाएँगी। इस हदीस से
यह भी सिद्ध होता है कि मसीह मौऊद नमाज़ के समय इमाम नहीं होगा, बल्कि कोई और होगा और वह इमाम मसीह की
खातिर नमाज़ें एकल कराएगा। इसलिए अब ऐसा ही होता है जिस दिन हम अधिक बीमारी के कारण बिल्कुल नहीं आ
सकते। उस दिन नमाज़ें एकल नहीं होतीं और इस हदीस के शब्दों से यह ज्ञात होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि
व सल्लम ने सहेपूर्ण ढंग से यह फ़रमाया है कि उसकी खातिर ऐसा होगा। चाहिए कि हम रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो
अलैहि व सल्लम) की भविष्यवाणियों का सम्मान और आदर करें और उनके प्रति उदासीन न हों अन्यथा यह एक महापाप
होगा कि हम आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की भविष्यवाणियों को तुच्छ दृष्टि से देखें। खुदा तआला तआला ने ऐसे
ही कारण उत्पन्न कर दिए कि इतने समय से नमाज़ें एकल हो रही हैं अन्यथा एक-दो दिन के लिए यह बात होती तो कोई
चिन्ह न होता। हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रत्येक शब्द और प्रत्येक अक्षर का आदर करते हैं।"

(मल्फूज़ात खंड 2 पृष्ठ 92,93, संस्करण 2018, कादियान)

★ ★ ★

मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मदीना में अल्लाह तआला ने वह
अन्सार प्रदान किए जिन्होंने अपनी ईमानी शक्ति के ऐसे शानदार प्रदर्शन किए जिन्हें देखकर मनुष्य
का हृदय आनंद और प्रसन्नता से भर जाता है।

उन्होंने जिस प्रकार भेड़-बकरियों की तरह अपने सिरों को इस्लाम की राह में कटवाया उसके
चिन्ह इतिहास के पन्नों पर ही नहीं हृदयों की गहराइयों पर इस प्रकार अंकित हैं कि प्रलय तक आने
वाली पीढ़ियाँ उनकी शानदार कुर्बानियों को कभी विस्मृत नहीं कर सकतीं।

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूर: अल्-मोमिनून आयत
संख्या 31 "इन्ना फी ज़ालिका ला आयातिन व इन कुन्ना लमुबतलीन" की व्याख्या में
फ़रमाते हैं:

मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मदीना में अल्लाह
तआला ने वह अन्सार प्रदान किए जो मजबूत सहारे को दृढ़ता से पकड़ने वाले थे और
जिन्होंने अपनी ईमानी शक्ति के ऐसे शानदार प्रदर्शन किए जिन्हें देखकर मनुष्य का
हृदय आनंद और प्रसन्नता से भर जाता है। मदीना आने के बाद जब रसूल-ए-करीम
(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को यह समाचार मिला कि सीरिया से काफिरों का एक
व्यापारिक काफिला अबू सुफ़ियान के नेतृत्व में आ रहा है और वह रास्ते में सभी अरब
कबीलों को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काता आ रहा है तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व
सल्लम) ने आवश्यक समझा कि उसकी बुराइयों का रोकथाम किया जाए। अतः आप

(सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्होम) के एक समूह को अपने
साथ लेकर मदीना से चल पड़े। चूँकि यह एक छोटा सा काफिला था इसलिए मुसलमानों
ने इसे कोई अधिक महत्व नहीं दिया और उन्होंने समझा कि थोड़े से व्यक्ति भी यदि
चले गए तो इस काफिले का सरलता के साथ सामना किया जा सकता है किंतु अल्लाह
तआला की ओर से रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को सूचना दी गई
कि वास्तविक सामना इस व्यापारिक काफिले से नहीं बल्कि काफिरों के एक बड़े सेना
दल से नियत है जो मक्का से इस काफिले की सहायता के लिए आ रहा है। किंतु साथ
ही अल्लाह तआला ने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को इस रहस्य के
अनावरण से रोक दिया क्योंकि अल्लाह तआला चाहता था कि सहाबा (रज़ियल्लाहु

शेष पृष्ठ 07 पर

खुत्ब: जुमअ:

नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने एक सैन्य टुकड़ी भेजते हुए सलाह दी:

अभिवादन का बहुत प्रसार करना, अर्थात शांति को प्रचलित करना। लोगों को भोजन कराना, यह नहीं कि उन्हें भूखा मारना है।

अल्लाह तआला से इस प्रकार लज्जा करना जिस प्रकार एक सम्मानित व्यक्ति अपने घर वालों से शर्माता है।

जब भी कोई गलती या पाप हो जाए उसके तुरंत बाद अच्छा कर्म कर लिया करना क्योंकि अच्छे कर्म पापों को मिटा डालते हैं।

हुनैन के युद्ध में भी अल्लाह तआला की ओर से ऐसे सेना दलों के उतारे जाने का उल्लेख मिलता है जिन्हें फरिश्तों से व्याख्यायित किया जाता है।

"बहुत अच्छी तरह याद रखो जो व्यक्ति मरने के लिए तैयार हो जाए उसे कोई नहीं मार सकता। सच्चे रूप में मृत्यु को स्वीकार करने वाली पैगम्बरों की समुदाय ही होती है। फिर कोई है जो उसे मार सके? कदापि नहीं। सनातन जीवन प्राप्त करने का सिद्धांत यही है कि मनुष्य अल्लाह तआला के लिए मृत्यु को स्वीकार करे और जब कोई मनुष्य इस इरादे से खड़ा होता है तो अल्लाह तआला के फरिश्ते उसे जीवित करने के लिए खड़े हो जाते हैं। मानो कुश्ती आरंभ हो जाती है मनुष्य ज़ोर लगाता है कि अल्लाह तआला की राह में मृत्यु प्राप्त हो किंतु फरिश्ते ज़ोर लगाते हैं कि उसे जीवित रखा जाए।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

सन् 8 हिजरी में घटित कुछ युद्धों व सैन्य अभियानों के संदर्भ में सीरत नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का ईमान बढ़ाने वाला वर्णन माननीय डॉक्टर सैयद शहाब अहमद साहिब (कनाडा) और माननीय मुबारक खोखर साहिब (लाहौर) का सद्गति का उल्लेख और अनुपस्थिति में जनाज़ा की नमाज़

खुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्जा मसरूर अहमद खलीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनसिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 सितम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ. الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ. الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ. مَلِكُ يَوْمِ الدِّينِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ.
اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ. صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّالِّينَ

हुनैन के युद्ध के संदर्भ में वर्णन कर रहा था। इसकी अतिरिक्त विस्तार से जानकारी इस प्रकार है। हुनैन के युद्ध में भी अल्लाह तआला की ओर से ऐसे सेना दलों के उतारे जाने का उल्लेख मिलता है जिन्हें फरिश्तों से व्याख्यायित किया जाता है।

अतः हुनैन के युद्ध के उल्लेख में अल्लाह तआला कुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ. ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ
(सूरत अत-तौबा: 26)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपनी शांति उतारी और ऐसे सेना दल उतारे जिन्हें तुम देख नहीं सकते थे और उसने उन लोगों को दंड दिया जिन्होंने इंकार किया था और काफ़िरों की ऐसी ही सज़ा होती है।

टीकाकारों और जीवनी लेखकों ने इस युद्ध में फरिश्तों के अवतरण पर विभिन्न चर्चाएँ की हैं। "कुछ लोगों का विचार है कि फरिश्तों का अवतरण केवल ईमान वालों के लिए शुभ सूचना और उनके हृदयिक संतोष के लिए था अन्यथा फरिश्ते युद्ध में वास्तव में भाग नहीं लिए थे। यह धारणा भी कुछ प्रामाणिक हदीसों जो हैं उनके विपरीत है। प्रामाणिक रिवायत से सिद्ध है कि फरिश्ते युद्ध में वास्तव में भाग लिए। हाँ, यहाँ यह शंका उत्पन्न होती है कि सहायता के लिए तो एक ही फरिश्ता पर्याप्त था तो हज़ारों फरिश्ते क्यों उतरे? इमाम इब्र कसीर ने युद्ध में फरिश्तों के अवतरण की सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में मौजूद हदीसों उद्धृत करने के बाद लिखते हैं कि अल्लाह की ओर से फरिश्तों का अवतरण और मुसलमानों को इसकी सूचना शुभ सूचना के रूप में थी अन्यथा अल्लाह इसके बिना भी अपने शत्रुओं के विरुद्ध मुसलमानों की सहायता कर सकता है इसलिए उसने फ़रमाया सहायता केवल अल्लाह की ओर से है और सूरह मुहम्मद में यह फ़रमाया कि अल्लाह चाहे तो स्वयं ही उन काफ़िरों से प्रतिशोध ले ले किंतु वह परीक्षा लेता है।"

(अल् फ़ज़ल इंटरनेशनल तारीख 24 से 29 जुलाई 2023 पृष्ठ 8-9,

शुक्रवार का खुत्बा 7 जुलाई 2023)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी यह बात वर्णन फ़रमाई है। आप

(अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि कुरआन में फरिश्तों की सहायता की शुभ सूचना का प्रसंग है ताकि ईमान वालों के हृदयों को शीतलता पहुँचे और मुठभेड़ में उन्हें कोई भय न हो। इसलिए अल्लाह तआला ने कुरआन में ईमान वालों से वादा किया और उन्हें शुभ सूचना दी कि वह पाँच हज़ार फरिश्तों से उनकी सहायता को आएगा। इस संख्या को अधिक करके इसलिए दिखाया ताकि उनके लिए शुभ सूचना हो हालांकि फरिश्तों में से एक फरिश्ता ही यह सामर्थ्य रखता है कि वह अपने पालनहार के आदेश से धरती को उलट-पलट कर दे। उसके लिए पाँच हज़ार की नहीं बल्कि पाँच की भी आवश्यकता नहीं है किंतु अल्लाह तआला ने चाहा कि उन्हें महान सहायता दिखाए तो उसने वह शब्द चुना जिससे सहायता करने वालों की बहुलता प्रकट होती है और यही अभिप्रेत था।

(उर्दू अनुवाद अज़ अल्-तबलीग, रूहानी खज़ायन खंड 5 पृष्ठ 448)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी तफ़सीर सगीर में इसके बारे में संक्षिप्त टिप्पणी दी है। सूरह आल-ए-इमरान की आयत एक सौ सत्ताईस के पादटिप्पणी में लिखा है कि " फरिश्तों का उल्लेख केवल इसलिए है कि स्वप्न या अलौकिक दर्शन में शुभ सूचना मिलने से मनुष्य का साहस बढ़ता है। अन्यथा वास्तविक अभिप्रेत यही था कि अल्लाह तआला सहायता करेगा।" (तफ़सीर सगीर पृष्ठ 96 सूरह आल-ए-इमरान उक्त आयत:127 के अंतर्गत) अर्थात यह भी अलौकिक दर्शन का रंग था जो प्रकट हुआ था।

फिर एक स्थान पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि

"बहुत अच्छी तरह याद रखो जो व्यक्ति मरने के लिए तैयार हो जाए उसे कोई नहीं मार सकता। सच्चे रूप में मृत्यु को स्वीकार करने वाली पैगम्बरों की समुदाय ही होती है। फिर कोई है जो उसे मार सके? कदापि नहीं। सनातन जीवन प्राप्त करने का सिद्धांत यही है कि मनुष्य अल्लाह तआला के लिए मृत्यु को स्वीकार करे और जब कोई मनुष्य इस इरादे से खड़ा होता है तो अल्लाह तआला के फरिश्ते उसे जीवित करने के लिए खड़े हो जाते हैं। मानो कुश्ती आरंभ हो जाती है मनुष्य ज़ोर लगाता है कि अल्लाह तआला की राह में मृत्यु प्राप्त हो किंतु फरिश्ते ज़ोर लगाते हैं कि उसे जीवित रखा जाए।

जब अल्लाह का बंदा कहता है कि मैं अल्लाह के लिए मरना चाहता हूँ तो अल्लाह तआला के सारे फरिश्ते कहते हैं हम मरने नहीं देंगे और अंततः फरिश्ते ही जीतते हैं। बंदा चाहता है कि मर जाए। वह इसके लिए अपने आप को ऐसी परिस्थितियों में डालता है जिनका परिणाम मृत्यु होता है किंतु वह मरता नहीं... हुनैन की घटना को ही देख लो जब शत्रु आक्रमण करके आगे बढ़ा तो उस समय रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास केवल बारह व्यक्ति थे। शेष सब शत्रु की तीरंदाजी से तितर-बितर हो गए थे। उस समय हज़रत अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने

कहा हुआ ज़रा पीछे हट जाइए किंतु आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सवारी को एड़ी लगाई और आगे बढ़ते हुए फ़रमाया: "अन्नबिद्यु ला कज़िब, अन्नबु अब्दिल मुत्तलिब" मैं अल्लाह तआला का सच्चा पैग़म्बर हूँ मैं पीठ किस प्रकार दिखा सकता हूँ। यह एक ऐसा वाक्य था जो मानवता को भुलाकर अल्लाह तआला के सामने लाने वाला था। चार हज़ार तीरंदाजों के मुकाबले में एक व्यक्ति कहता है मैं यहाँ से हट नहीं सकता तो यह मनुष्य नहीं बल्कि अल्लाह बोल रहा था। रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उस समय कहा भी कि "अन्नबु अब्दिल मुत्तलिब"। मैं मनुष्य ही हूँ। इसलिए जब रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा कि मैं अल्लाह की राह में मरना चाहता हूँ तो अल्लाह तआला के फरिश्ते उतर आए और हुनैन की पराजय विजय में बदल गई और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) विजेता बनकर युद्ध के मैदान से लौटे।"

(खुतबात-ए-शूरा खंड प्रथम पृष्ठ 612-613, मजलिस मुशावरत 1935, नज़ारत नशरो इशाअत क़ादियान 2013)

शत्रु की पराजय और पलायन के बारे में यह विवरण पहले व्यक्त हो चुके हैं कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जब अन्सार को पुकारा और वे वापस आ गए और फिर बहुत जोश और उत्साह से लड़ने लगे तो इसके साथ ही नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने प्रार्थना की और अपने हाथ से कंकरियों की मुट्ठी काफ़िरों की ओर फेंकी जिसका परिणाम यह हुआ कि बन्ू हवाजिन जिनका यह दावा था कि आज तक मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का मुकाबला किसी योद्धा जाति से हुआ ही नहीं। हमसे मुकाबला होगा तो हम बताएँगे कि युद्ध क्या होता है और जो वास्तव में अरब के सबसे शक्तिशाली कबीलों में से एक था। यह नहीं कि केवल बातें थीं बल्कि वास्तव में था वह शक्तिशाली कबीला। वह थोड़ी ही देर में पराजय खाकर भागने लगे। अपनी स्त्रियों, बच्चों और मवेशियों की किसी को ख़बर न रही। मुसलमानों के हाथों बहुत से लोग मारे गए और हज़ारों की संख्या में बंदी बनाए गए और भागने वालों की बड़ी संख्या औतास की ओर भाग गई।

(शरह ज़रकानी खंड 3 पृष्ठ 530-531 व ज़रकानी खंड 4 पृष्ठ 19, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत 1996)

इस युद्ध में हवाजिन के सैकड़ों लोग मारे गए। हज़रत अबू तलहा (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने बीस मूर्तिपूजकों को मार डाला। उसी प्रकार सैन्य टुकड़ी औतास में मूर्तिपूजकों के तीन सौ व्यक्ति मारे गए। (दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), खंड 9 पृष्ठ 285, बज़म इकबाल लाहौर)

हवाजिन के पलायन का मार्ग अपनाने के बावजूद सक्रीफ के योद्धा डटे रहे। जो सक्रीफ कबीला था वह डटे रहे और अत्यंत साहस से लड़ते रहे यहाँ तक कि उनके सत्तर लोग मारे गए। उनका सबसे अंतिम ध्वजवाहक उस्मान बिन अब्दुल्लाह था। जब वह मारा गया तो फिर सक्रीफ भी भाग गए। उस्मान के मारे जाने की ख़बर जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में पहुँची तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इस इस्लाम के शत्रु के बारे में फ़रमाया। अल्लाह उसे अपनी दया से दूर करे। यह कुरैश से द्वेष रखता था जबकि इसके हत्यारे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी उमय्या के लिए दया प्राप्ति की प्रार्थना फ़रमाई और हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा मैं आशा करता हूँ कि अल्लाह तआला मुझे उसी अवस्था में शहादत प्रदान करेगा। अतः उन्होंने ताइफ की घेराबंदी के दौरान ही शहादत पाई। कुछ रिवायतों के अनुसार अंतिम ध्वजवाहक उस्मान बिन अब्दुल्लाह को हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने मार डाला था। (मगाजी अल-वाकिदी खंड 3 पृष्ठ 911-912, आलमुल कुतुब 1984) (तबक्रात इन्न सअद खंड 6 पृष्ठ 55, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत) (शरह ज़रकानी खंड 3 पृष्ठ 531, दारुल कुतुबिल इल्मिया) (सबुलुल हिदा वर रशाद फी सीरत खैरिल इबाद खंड 5 पृष्ठ 334, दारुल कुतुबिल इल्मिया) किंतु वह पहली वाली अधिक विस्तृत है।

इस युद्ध में चार सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्होम) शहीद हुए। उनके नाम हैं हज़रत उम्मे ऐमन के पुत्र ऐमन बिन उबैद। यह उम्मे ऐमन वही हैं जो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की धाय माँ थीं अर्थात् देखभाल और पालन-पोषण करने वाली थीं। सुराका बिन हारिस। यह अन्सारी सहाबी थे। उनके पुत्र हारिसा बिन सुराका युद्ध बद्र में शहीद हुए थे। यज़ीद बिन जमअह, आरंभ में इस्लाम स्वीकार करने वाले थे और अज्ञानता के काल में भी कुरैश के यहाँ उच्च स्थान और पद पर विद्यमान थे। कुरैश महत्वपूर्ण मामलों में उनसे परामर्श लिया करते थे। यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के भांजे थे। युद्ध के मैदान में घोड़े के उछलने से उनकी शहादत हुई थी। नीचे गिरे और फिर उसके नीचे आ गए। कुछ के अनुसार उनकी शहादत युद्ध ताइफ में हुई थी इसका उल्लेख भी आगे आएगा। चौथे हज़रत अबू आमिर थे जिनका विवरण भी आगे सैन्य टुकड़ी औतास में आएगा। (उद्दृत दाइरा

मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 284, बज़म इकबाल लाहौर)

(असदुल गाबा उक्त शब्द यज़ीद बिन जमअह के अंतर्गत, खंड 5 पृष्ठ 453, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत 2003)

हज़रत आइज़ (रज़ियल्लाहु अन्हो) वर्णन करते हैं कि हुनैन के युद्ध में मेरे माथे में एक तीर लगा और मेरे चेहरे और सीने पर रक्त बहकर फैलने लगा। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपना पवित्र हाथ मेरे चेहरे और सीने से पेट तक फेरा और स्वयं रक्त साफ किया जिससे रक्त उसी समय बंद हो गया। इसके बाद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मेरे लिए प्रार्थना फ़रमाई। कुछ वर्णन करने वाले यह भी कहते हैं कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जो हाथ फेरा था तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पवित्र हाथों के वह निशान उनके शरीर पर बाद में भी रहे।

(सीरतुल हलबिया खंड 3 पृष्ठ 162, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत 2002) (शरह ज़रकानी खंड 5 पृष्ठ 457, दारुल कुतुबिल इल्मिया 1996)

हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हो) जो कि एक घुड़सवार दस्ते के अध्यक्ष थे वह आरंभिक चरण में ही बुरी तरह घायल हो चुके थे। पहले वर्णन हो चुका है। जब सेना तितर-बितर हुई है तो आप (रज़ियल्लाहु अन्हो) गिर गए थे। एक वर्णनकर्ता बयान करते हैं कि जब काफ़िरों को पराजय हो गई और मुसलमान अपने-अपने तंबूओं की ओर चले गए तो मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को देखा कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) लोगों के बीच चल रहे थे और फरमा रहे थे कि मुझे खालिद बिन वलीद तक कौन पहुँचाएगा। जब उनके पास पहुँचे तो खालिद हौदे के साथ टेक लगाए हुए थे। हज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खालिद के पास बैठ गए और घाव देखकर अपना लार लगाया जिससे उन्हें स्वास्थ्य लाभ हो गया। इसके अलावा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा (रज़ियल्लाहु अन्हो), हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ियल्लाहु अन्हो) और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हो), हज़रत उस्मान (रज़ियल्लाहु अन्हो) और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हो) भी घायल हुए थे।

(उद्दृत दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 279, बज़म इकबाल लाहौर) (सीरतुल हलबिया खंड 3 पृष्ठ 162, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरूत 2002) (अस-सीरतुन नबविया अस-सहीहा मुहाविलतुत तब्कीक कवाइदिल मुहद्दीसीन भाग 2 पृष्ठ 504, मकतबतुल उलूम वल हिकम 1914)

मक्का और मदीना के निवासियों को विजय हुनैन की शुभ सूचना भेजी। आरंभ में जब हुनैन के मैदान से कुछ मुसलमान भागे तो उनमें से कुछ तो मक्का चले गए और वहाँ यह बताया कि मुसलमानों को पराजय हो चुकी है और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह की पनाह मारे गए हैं। इस समाचार से मक्का में उपस्थित कपटाचारियों और जिनके हृदयों में द्वेष था वह बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि अब अरब अपने पैतृक धर्म पर वापस आ जाएँगे। इस अवसर पर मक्का के अमीर अत्ताब बिन असीद ने अत्यधिक साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया और मक्का के निवासियों को संबोधित करते हुए कहा। "इन कुतिला मुहम्मदुन फा इन्ना दीनल्लाहि काइमुन, वल्लज़ी यअबुदुहु मुहम्मदुन हैय्युन ला यमूत"। यदि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) शहीद भी हो गए तो निःसंदेह अल्लाह का धर्म सदैव स्थापित रहेगा और जिस सत्ता की उपासना मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) करते थे अर्थात् अल्लाह तआला, वह सत्ता सदैव रहने वाली है। वह जीवित है और जीवित रहेगी और कभी नहीं मरेगी। और अभी थोड़ी ही देर बीती थी कि हुनैन से यह शुभ सूचना भी आ गई कि मुसलमानों को विजय हुई है और बन्ू हवाजिन बहुत बुरी तरह पराजय खाकर भाग गए हैं। उसी प्रकार मदीना में भी यह समाचार पहले पहुँच चुकी थी। पराजय की ख़बर पहले पहुँच गई थी, किसी ने पहुँचा दी थी। वहाँ हज़रत नहीक बिन औस को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने विजय की शुभ सूचना देकर भेजा। वह वर्णन करते हैं कि मैं सायंकाल ही रवाना हो गया। रास्ते में भी लोग यह बातें कर रहे थे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेना को ऐसी पराजय का सामना करना पड़ा है कि पहले कभी ऐसी पराजय न हुई होगी और मालिक बिन औफ की सेना मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेना पर प्रबल हो गई है तो मैंने कहा यह सब झूठ है बल्कि अल्लाह ने अपने नबी को विजय प्रदान की है और उनकी स्त्रियों और बच्चों को बंदी के रूप में प्रदान किया है। वह कहते हैं कि मैं यह समाचार देता हुआ तीन दिन में मदीना पहुँच गया और इससे पहले मैंने कभी इतनी सवारी नहीं की थी अर्थात् निरंतर तीव्र गति से यात्रा करता रहा। फिर मदीना पहुँचकर घोषणा की कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के अनुग्रह से कुशलतापूर्वक हैं और

मुसलमानों को बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई है। और जब मैं वहाँ से चला था तो मुसलमान कुछ युद्ध की संपदा एकल कर चुके थे और कुछ एकल कर रहे थे और फिर वह पवित्र पत्तियों के कक्षों की ओर गए और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की कुशलता और सलामती की शुभ सूचना उन्हें भी दी और इस पर सबने अल्लाह का धन्यवाद अदा किया और प्रसन्न हो गए।

(सबुलुल हिदा खंड 5 पृष्ठ 320 व 340, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993)(ज़रकानी खंड 3 पृष्ठ 508, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1996)(दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 280 से 282, बज़म इकबाल लाहौर)

बनू हवाजिन का सेनापति मालिक बिन औफ जो बड़ी कठिनाई से प्राण बचाकर मैदान से भागा था वह और उसके साथी एक घाटी पर खड़े हो गए। उसने कहा रुक जाओ यहाँ तक कि कमज़ोर लोग और तुम्हारे भाई तुम्हें आ मिलें। हज़रत जुबैर बिन औवाम (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने उन्हें देखा तो उन्होंने उन पर आक्रमण कर दिया और मालिक वहाँ से भागकर सक्रीफ के किले में प्रवेश हो गया।

(सीरत इब्र हिशाम पृष्ठ 771, दारुल कुतुबिल इल्मिया 2001)(सबुलुल हिदा वर रशाद फी सीरत खैरिल इबाद खंड 5 पृष्ठ 333-334, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993)

मुहल्लिम बिन जस्सामा द्वारा एक व्यक्ति को हत्या करने और उसके हत्या बदला (दियत) के प्रसंग की अतिरिक्त विस्तार से जानकारी इस प्रकार व्यक्त हुई है। विजय मक्का के उल्लेख से तुरंत पहले के प्रवचन में सैन्य टुकड़ी इज़म की विस्तार से जानकारी में यह उल्लेख हुआ था कि एक सहाबी मुहल्लिम बिन जस्सामा ने एक ऐसे व्यक्ति को मार डाला जिसने गुज़रते हुए "अस्सलामो अलैकुम" कहा था किंतु इसके बावजूद उन्होंने उसको मार डाला। इस प्रसंग के विषय में कुछ अतिरिक्त विस्तार से जानकारी व्यक्त की जाती है, वह यह है कि हुनैन के युद्ध के बाद जब आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) युद्ध ताइफ के लिए रवाना हो रहे थे कि एक दिन नमाज़ जुह के बाद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) एक वृक्ष के नीचे विराजमान हुए। उयैना बिन हिस्स उठा। उसने मृत आमिर बिन अज़बत अशजई के रक्त का दावा किया। उसके साथ ही अकररअ बिन हाबिस उठा वह मुहल्लिम बिन जस्सामा को बचाना चाहता था। इन दोनों ने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सामने बहस आरंभ कर दी। उयैना ने कहा हे अल्लाह के रसूल! अल्लाह की कसम! मैं उसे अर्थात् हत्यारे को नहीं छोड़ूँगा। उनकी स्त्रियों पर भी उसी प्रकार दुःखों का पहाड़ गिराऊँगा जिस प्रकार उसने हमारी स्त्रियों पर दुःखों का पहाड़ गिराया था। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उसे फ़रमाया कि हत्या बदला (दियत) ले लो। पचास ऊँट अभी ले लो और पचास ऊँट मदीना पहुँच कर ले लेना किंतु उयैना ने हत्या बदला (दियत) लेने से इंकार कर दिया। बहरहाल कुछ वार्तालाप के बाद अंततः उन लोगों ने हत्या बदला (दियत) स्वीकार कर ली। हत्यारा मुहल्लिम एक ओर खड़ा था वह प्रतिशोध (क्रिसास) के लिए तैयार होकर आया था कि अब तो मेरी मृत्यु आई। हत्या बदला (दियत) आदि का निर्णय होने के बाद मुहल्लिम उठकर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास बैठ गया। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसने निवेदन किया जो बात आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक पहुँची है मैं उससे अल्लाह के समक्ष पश्चाताप करता हूँ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) भी मेरे लिए क्षमा की प्रार्थना फरमाएँ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पूछा तुम्हारा क्या नाम है उसने कहा मुहल्लिम बिन जस्सामा। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया क्या तुमने इस्लाम के आरंभ में उसे मार डाला अर्थात् कि उसने आते ही कहा था "अस्सलामो अलैकुम" फिर भी तुमने हत्या कर डाली और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने ऊँचे स्वर में कहा कि हे अल्लाह! मुहल्लिम को क्षमा न करना। यह वाक्य सबने सुना। मुहल्लिम ने दूसरी बार कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं क्षमा माँगता हूँ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) भी मेरे लिए क्षमा याचना करें। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फिर ऊँचे स्वर में कहा ताकि लोग सुन लें कि हे अल्लाह! मुहल्लिम बिन जस्सामा को क्षमा न करना। उसने तीसरी बार फिर कहा और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने तीसरी बार भी वही कहा। फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उसे फ़रमाया कि मेरे सामने से उठकर चले जाओ तो वह आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सामने से उठा और वह अपने आँसू अपने चादर से पोंछ रहा था। इब्र इशाक की भी एक रिवायत है। वह कहते हैं कि मुहल्लिम की कौम के लोग बयान करते हैं कि बाद में आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उसको उसकी क्षमा की भी प्रार्थना दी थी।

(सबुलुल हिदा वर रशाद फी सीरत खैरिल इबाद खंड 5 पृष्ठ 339-340, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993) (उद्धृत सुनन अबू दाऊद किताबुद दियात

अध्याय "अल-इमामि यामुरु बिल अफवि फिद दम", हदीस संख्या 4503) (सुनन इब्र माजा किताबुद दियात अध्याय "मन कतला अमदन...", हदीस संख्या 2625)

सैन्य टुकड़ी औतास की विस्तार से जानकारी इस प्रकार है। हुनैन के मैदान से बुरी तरह पराजय खाने के बाद बनू हवाजिन की सेना जिधर उनका मुँह उठा उस ओर भाग गई। इसका एक भाग जिसमें बनू हवाजिन का सेनापति मालिक बिन औफ भी था वह ताइफ की ओर भागा और ताइफ के किले में शरण ले ली और एक भाग औतास की घाटी में एकल हो गया और एक नखला अर्थात् नुखैला की ओर भाग गया। औतास हुनैन के निकट ही एक घाटी का नाम है। बनू हवाजिन चूँकि अपनी स्त्रियाँ, बच्चे और सारे मवेशी साथ लेकर आक्रमणकारी हुए थे और स्वयं तो वे भाग गए और अब यह सब कुछ युद्ध की संपदा के रूप में मुसलमानों के हाथ आ गया था। इस्लाम के इतिहास में अभी तक का यह सबसे अधिक युद्ध की संपदा था जो उस समय तक मुसलमानों को मिला।

नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सभी बंदी और युद्ध की संपदा हज़रत मसऊद बिन अमरो गिफ़ारी की निगरानी में जिअराना स्थान की ओर भिजवा दिए और स्वयं संपूर्ण सेना लेकर ताइफ की ओर रवाना हो गए और हज़रत अबू आमिर अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हो) (उनका नाम उबैद बिन सुलैम था) की कमान में एक सेना औतास की ओर रवाना फ़रमाई। इस सेना में अबू मूसा अशअरी और सलमा बिन अकवअ भी थे। हज़रत अबू आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने शत्रु को दंड युद्ध की चुनौती दी। वहाँ शत्रुओं के दस भाई थे जो अद्वितीय युद्ध कौशल के कारण प्रसिद्धि रखते थे। सबसे पहले यह दस भाई दंड युद्ध के लिए निकले। पहले एक भाई आया। अबू आमिर ने उसको पहले इस्लाम की दावत दी किंतु उसने मुकाबले को प्राथमिकता दी। अबू आमिर ने कहा कि "अल्लाहुम्मशहद अलैह"। हे अल्लाह! इस पर साक्षी रहना। यह कहकर उन्होंने तलवार का ऐसा वार किया कि वह दो टुकड़े होकर भूमि पर जा गिरा। फिर दूसरा भाई आया। अबू आमिर ने उसको भी पहले इस्लाम की दावत दी और उसके इंकार पर मुकाबला किया और वह भी मारा गया। इस प्रकार एक के बाद दूसरे नौ भाई मारे गए जब दसवाँ भाई आया और अबू आमिर पूर्ववत "अल्लाहुम्मशहद अलैह" कहकर उस पर वार करने ही लगे थे कि वह बोल उठा। "अल्लाहुम्मा ला तशहद अलैय्या"। हे अल्लाह! मुझ पर साक्षी न बनना और इस प्रकार प्रकट किया कि जैसे वह इस्लाम स्वीकार कर रहा है। यह सुनते ही अबू आमिर ने अपनी तलवार नीचे कर ली और उसको छोड़ दिया किंतु उसने पलटकर अबू आमिर पर आक्रमण कर दिया। धोखा दिया उसने। कुछ रिवायतों के अनुसार तो उसने अबू आमिर को शहीद किया किंतु दूसरी रिवायतों के अनुसार यह सही नहीं है क्योंकि जिसने अबू आमिर को शहीद किया था उसको हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने उसी समय मार डाला था। अधिक सही रिवायत यही है कि दसवाँ भाई जो था यह बाद में इस्लाम ले आया था और कहा जाता है कि बहुत अच्छा मुसलमान सिद्ध हुआ और बाद में जब भी रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उस पर दृष्टि पड़ती तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) फ़रमाया करते थे कि "हाज़ा शरीदु अबी आमिर"। कह यह अबू आमिर की तलवार से बचा हुआ है। बहरहाल हज़रत अबू आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हो) उसी प्रकार अत्यधिक वीरता से लड़ते रहे और जो भी उनकी तलवार के सामने आता वह मारा जाता। अंत में हारिस जुशमी के दो पुत्रों अला और औफा ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी। एक तीर उनके सीने में लगा और एक घुटने में लगा। कुछ रिवायतों के अनुसार तीर मारने वाला दुरैद बिन सिम्मा का पुत्र सलमा था। अबू मूसा अशअरी कहते हैं कि मैंने अबू आमिर से पूछा कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को किसने तीर मारा है तो उन्होंने एक व्यक्ति की ओर संकेत किया और मैंने उसका पीछा किया जिस पर वह भाग खड़ा हुआ और मेरे ललकारने पर रुका तो हम तलवारबाजी करने लगे और मैंने उसको मार डाला। वापस आकर मैंने अबू आमिर से कहा। अल्लाह ने तुम्हारे हत्यारे को नरक में पहुँचा दिया है। अबू आमिर ने मुझसे कहा कि मेरा तीर निकालो। तीर तो अभी शरीर में ही था। कहते हैं जब मैंने तीर निकाला तो घाव से पानी बह निकला। जिससे यह ज्ञात हुआ कि घाव

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क्रादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टेस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.



चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क्रादियान, लुकमान अहमद बाजवा और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा फ़ोन नंबर :- +91-9646561639, +91-8557901648

गहरा है और जीवन की अब कोई आशा नहीं है। अबू मूसा अशअरी कहते हैं कि अबू आमिर ने मुझे कहा कि नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में मेरा अभिवादन पहुँचा देना और हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में मेरे लिए क्षमा याचना और क्षमादान की प्रार्थना की विनती करना। और मेरा घोड़ा और मेरे हथियार भी हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में प्रस्तुत कर देना और साथ ही मुझे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और झंडा मेरे सुपुर्द किया। थोड़ी देर में ही वह स्वर्गवासी हो गए। अबू मूसा अशअरी ने उन लोगों से युद्ध किया और शत्रु पराजय खाकर वहाँ से भाग गया। उनके कुछ लोग मारे गए और अबू मूसा वहाँ से भी युद्ध की संपदा और बंदी लेकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हो गए। अबू मूसा अशअरी वर्णन करते हैं कि मैं जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) रस्सियों से बनी हुई एक चारपाई पर लेटे हुए थे जिस पर बिस्तर आदि कुछ नहीं था किंतु बुखारी और कुछ दूसरी रिवायतों के अनुसार इस पर बिस्तर भी था किंतु बहुत पतला सा होगा। कोई चादर सी बिछी हुई थी। उन रस्सियों के निशान नबी करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पवित्र शरीर पर प्रकट हो रहे थे। वह कहते हैं कि मैंने युद्ध औतास की विस्तार से जानकारी आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की पवित्र सेवा में प्रस्तुत की और अबू आमिर की शहादत की विस्तार से जानकारी बताते हुए उनकी प्रार्थना की विनती भी प्रस्तुत कर दी जिस पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पानी मँगवाकर पवित्रता (वज़ू) फ़रमाई और फिर अपने दोनों हाथ उठाकर प्रार्थना करते हुए फ़रमाया: "अल्लाहुम्मग़फ़िर लि उबैदिन अबी आमिर। अल्लाहुम्मजअल यौमल क्रियामति फौक़ा कसीरिन मिन खल्किका मिननास" कि हे अल्लाह! उबैद अबू आमिर को क्षमा कर दे। हे अल्लाह! प्रलय के दिन अपनी सृष्टि में लोगों से सबसे ऊपर उसका स्थान रखना। अबू मूसा अशअरी वर्णन करते हैं कि मैंने निवेदन किया: हे अल्लाह के रसूल! मेरे लिए भी क्षमा की प्रार्थना फ़रमाएँ जिस पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उनके लिए भी प्रार्थना करते हुए फ़रमाया। "अल्लाहुम्मग़फ़िर लि अब्दिल्लाहि इब्ने क़ैसिन ज़बहू व अदखिलहू यौमल क्रियामति मुदखलन करीमा" हे अल्लाह! अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अर्थात अबू मूसा अशअरी का यह नाम था) के पाप क्षमा कर देना और उसको प्रलय के दिन सम्मानजनक स्थान प्रदान करना।

(सीरत इब्र हिशाम, पृष्ठ 772, मकतबा दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत)

(सबुलुल हिदा खंड 6 पृष्ठ 206-207 व खंड 5 पृष्ठ 333 व 339, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 2001) (दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), खंड 9 पृष्ठ 331-334, बज़म इकबाल लाहौर) (उद्धृत शरह ज़रकानी खंड 3 पृष्ठ 532 से 533, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1996) (तारीखुल खमीस खंड 2 पृष्ठ 523, दारुल कुतुबिल इल्मिया 2009) (बुखारी किताबुल मगाजी अध्याय युद्ध औतास, हदीस 4323)

फिर सैन्य टुकड़ी तुफैल बिन अमरो दौसी (जो जुलकफ़ैन की ओर है) का उल्लेख है। यह शव्वाल आठ हिजरी में हुआ। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जब हुनैन से ताइफ की ओर चलने लगे तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने तुफैल दौसी को जुलकफ़ैन नामक मूर्ति गिराने के लिए भेजा। हज़रत तुफैल दौस कबीले से संबंध रखते थे और अपनी कौम के उच्च कोटि के कवि और बुद्धिमान व विवेकशील प्रसिद्ध थे। उन्होंने मक्का काल में आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की भेंट की और उसी समय मुसलमान हो गए थे। कहा जाता है कि हुनैन के युद्ध के बाद उन्होंने स्वयं आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से प्रार्थना की कि जुलकफ़ैन नामक मूर्ति को गिराने के लिए उन्हें भेजा जाए। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उनको इस अभियान का अध्यक्ष नियुक्त फ़रमाया और यह सलाह फ़रमाई कि:

अभिवादन का बहुत प्रसार करना। अर्थात शांति को प्रचलित करना। लोगों को भोजन कराना, यह नहीं कि उन्हें भूखा मारना है। अल्लाह तआला से इस प्रकार लज्जा करना जिस प्रकार एक सम्मानित व्यक्ति अपने घर वालों से शर्माता है। जब भी कोई गलती या पाप हो जाए उसके तुरंत बाद अच्छा कर्म कर लिया करना क्योंकि अच्छे कर्म पापों को मिटा डालते हैं।

यह आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सलाह फ़रमाई और फिर फ़रमाया कि अपनी कौम के लोगों को साथ लेना और यह कार्य पूर्ण करके वापस ताइफ चले आना। अतः हज़रत तुफैल ने अपनी कौम के चार सौ व्यक्तियों को साथ लिया और लकड़ी के बने हुए उस मूर्ति को आग लगाकर जला दिया और उस समय यह कविता पढ़ी कि हे जुलकफ़ैन! सुन मैं तेरे उपासकों में से नहीं हूँ क्योंकि तुम तो अब बनाए गए हो जबकि हमारी उत्पत्ति तुम्हारी उत्पत्ति से भी पहले की है। देख मैंने तेरे अंदर और बाहर से सारे अस्तित्व को आग की लपटों से भर दिया है। यह अभियान सफलता के

साथ संपन्न करने के बाद ताइफ वापस आ गए। हुज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को अभी ताइफ पहुँचे चार दिन हुए थे।

हज़रत तुफैल अपने साथ चार सौ योद्धा बहादुर भी लेकर आए और उस समय के अनुसार यह आधुनिक युद्ध के शस्त्र अर्थात गुलेल और कवच-यान (दब्बाबा) भी लाए। गुलेल एक उपकरण है जिससे बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाते हैं अर्थात तोप की तरह की वस्तु होती है और कवच-यान (दब्बाबा) लकड़ी का एक मजबूत और बंद गाड़ी के समान डिब्बा है जिस प्रकार आजकल बख़्तरबंद कारें होती हैं उस प्रकार था उस ज़माने में जिसमें नीचे से कई व्यक्ति घुसकर किले की दीवार पर जा पहुँचते थे और शत्रु की पहुँच से सुरक्षित रहते हुए दीवार में दरार करते थे। यह शस्त्र पहली बार युद्ध ताइफ में प्रयोग हुए थे।

(दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 337-339, बज़म इकबाल लाहौर) (तबक़ातुल कुबरा खंड 2 पृष्ठ 119-120, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1990) (फरहंग सीरत पृष्ठ 120, ज़वार एकेडमी कराची 2003)(फ़िरोज़ उल लुगात पृष्ठ 1291, उक्त शब्द म.न. के अंतर्गत, फ़िरोज़ सन्ज लाहौर)

युद्ध ताइफ शव्वाल आठ हिजरी में हुआ। इसकी पृष्ठभूमि यह है कि ताइफ मक्का से पूर्व की ओर लगभग नब्बे किलोमीटर पर एक प्रसिद्ध नगर है। ताइफ अत्यंत मजबूत स्थान था। ताइफ उसे इसलिए कहते हैं कि इसके चारों ओर सुरक्षा के लिए चारदीवारी थी। यहाँ सक्रीफ का जो कबीला बसा हुआ था अत्यंत साहसी था। बहुत बहादुर था। समस्त अरब में विशिष्ट और कुरैश का मानो समकक्ष था। उरवा बिन मसऊद जो यहाँ का प्रमुख था उसका विवाह अबू सुफ़ियान की पुत्री से हुआ था। काफिर मक्का कहते थे कि कुरआन यदि उतरता तो मक्का या ताइफ के प्रमुखों पर उतरता। यह कहा करते थे कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पर उतरने के बजाय किसी बड़े व्यक्ति पर उतरना चाहिए था। बड़े व्यक्ति तो उन दो स्थानों पर रहते हैं। यहाँ के लोग युद्ध कौशल से भी परिचित थे। बहरहाल यहाँ एक सुरक्षित किला था। नगर के निवासियों ने वर्ष भर का भोजन सामग्री एकत्र किया। चारों ओर गुलेल और सर्वत्र निपुण तीरंदाज नियुक्त किए।

यह युद्ध वास्तव में हुनैन के युद्ध का ही सिलसिला है चूँकि हवाजिन और सक्रीफ के अधिकांश पराजित व्यक्ति अपने सरदार मालिक बिन औफ नसरी के साथ भागकर ताइफ ही आए थे और यहीं किलाबंद हो गए थे। इसलिए रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हुनैन से निपटकर सारी युद्ध की संपदा और छह हज़ार से अधिक बंदी दास और दासियाँ मक्का के निकट एक घाटी जिसका नाम जिअराना था वहाँ भेजा और स्वयं ताइफ का इरादा किया। जिअराना मक्का और ताइफ के मार्ग में मक्का के निकट एक कुएँ का नाम है। मक्का से इसकी दूरी लगभग सत्रह मील है। युद्ध की संपदा पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने बदील बिन वरक़ा या हज़रत मसऊद बिन अमरो गिफ़ारी को निरीक्षक नियुक्त फ़रमाया।

(उद्धृत सीरतुन नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अज़ शिबली नोमानी भाग प्रथम पृष्ठ 360, मकतबा इस्लामिया 2012) (उद्धृत अर-रहीकुल मख़तूम पृष्ठ 567, अल-मकतबतुस सलफ़िया लाहौर 2002) (सबुलुल हिदा वर रशाद फी सीरत खैरिल इबाद खंड 5 पृष्ठ 338-339, मकतबा दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993)(उद्धृत फरहंग सीरत पृष्ठ 88-178, ज़वार एकेडमी कराची 2003) बहरहाल आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हो) की कमान में एक हज़ार सैनिकों का अग्रिम दस्ता रवाना किया। उन्होंने वहाँ पहुँचकर किले वालों से अर्थात ताइफ वालों से वार्ता की कोशिश की किंतु किले वाले तैयार न हुए। हज़रत खालिद बिन वलीद (रज़ियल्लाहु अन्हो) को रवाना करने के बाद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने स्वयं भी ताइफ का रुख फ़रमाया। इन मार्गों के विशेषज्ञ साथ-साथ थे जो सेना के आगे-आगे चलते रहे। रास्ते में हुनैन के युद्ध में शत्रु सेना के सेनापति मालिक बिन औफ का एक किला था आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने पूछा कि इसमें इस समय कोई निवासी है? बताया गया कि यह खाली है तो इस पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इसे ध्वस्त करवा दिया। फिर यात्रा जारी रखते हुए ताइफ पहुँचे और किला ताइफ के निकट तंबू गाड़कर इसकी घेराबंदी कर ली।

(उद्धृत सबुलुल हिदा वर रशाद खंड 5, पृष्ठ 382, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993)(उद्धृत अर-रहीकुल मख़तूम पृष्ठ 567, अल-मकतबतुस सलफ़िया लाहौर 2002) (अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया खंड 9 पृष्ठ 305, मकतबा दारुस्सलाम)(किताबुल मगाजी लिल वाकिदी खंड 3 पृष्ठ 924-925, आलमुल कुतुब 1984)(दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 347, बज़म इकबाल लाहौर)

ताइफ के निवासी एक लंबे समय से इस युद्ध की तैयारी कर रहे थे उन्होंने किले का निर्माण और मरम्मत भी की और एक वर्ष का अनाज और अन्न आदि भी एकत्र कर लिया हुआ था और हुनैन के मैदान में अप्रत्याशित पराजय खाकर जितने लोग भाग सकते थे वे सब भागकर इस किले में शरण ले गए और किले के दरवाजे बंद कर लिए।

(उद्धृत सबुलुल हिदा वर रशाद खंड 5 पृष्ठ 382, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1993)(अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया खंड 9 पृष्ठ 309, मकतबा दारुस्सलाम)

नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने आरंभ में ताइफ के बहुत निकट एक खुली जगह पर पड़ाव डाला। अभी सेना ने पूरी तरह ठहरना भी न किया था कि किले से तीरंदाजों ने कड़ी तीरंदाजी करके बहुत से मुसलमानों को घायल कर दिया। उसी दौरान हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर ने रसूल अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! यह जगह हमारे पड़ाव के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि ताइफ के निवासी निपुण तीरंदाज हैं और उनके तीर दूर तक पहुँचते हैं। अतः आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें आदेश फ़रमाया कि कोई उपयुक्त जगह का चयन करें। फिर एक नई जगह पर सारी सेना स्थानांतरित हो गई। घेराबंदी के दौरान दोनों ओर से तीरंदाजी और पथराव के प्रसंग भी घटित होते रहे। इस स्थिति से निपटने के लिए आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने गुलेल लगाकर ताइफ के निवासियों पर बड़े-बड़े पत्थर फेंके। इस गुलेल के विषय में वर्णन हो चुका है कि यह हज़रत तुफैल दौसी (सैन्य टुकड़ी जुलकफ़ैन) से लौटते समय अपने साथ लाए थे। पत्थर फेंकने से ही एक दिन किले की एक दीवार में एक छेद हो गया। अतः मुसलमानों का एक समूह कवच-यान (दब्बाबा) के माध्यम से किले की दीवार की ओर बढ़ा यह एक बक्सा साथ था जिससे सुरक्षित किया जाता था। ताकि उसमें आगे बढ़कर उसके माध्यम से वहाँ अंदर जा सकें किंतु जब आगे बढ़े तो किले वालों ने उन पर लोहे के जलते हुए टुकड़े फेंकने आरंभ कर दिए। कवच-यान (दब्बाबा) में चूँकि बहुत सारा चमड़ा भी प्रयोग होता है जिस कारण उसे आग लग गई और उसके नीचे से मुसलमान योद्धाओं को बाहर निकलना पड़ा और जो ही वे बाहर निकले तो ताइफ वालों ने उन पर तीरंदाजी की और उनमें से अधिकांश को शहीद कर दिया। उसी दौरान एक बार आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने ताइफ वालों के अंगूरों के बागों को काटने का भी आदेश दिया। मेरा विचार है यह अंतिम उपाय था। जो मेरा विचार है कि डराने के लिए सामान्य रूप से प्रयोग किया गया होगा क्योंकि बाद में रद्द भी कर दिया था। पहले तो किले वालों ने बड़ी अकड़ के साथ कहा कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जलाते हैं हमारे बाग तो जला दीजिए। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) लोग हमारी मिट्टी और पानी तो साथ नहीं ले जा सकते। उन्हें अपने क्षेत्र की उपजाऊ शक्ति पर बहुत अभिमान था और उद्देश्य यह था कि हम दोबारा खेती कर लेंगे हम डरने वाले नहीं किंतु जब वास्तव में बागों को नष्ट करना आरंभ किया। और कुछ भाग उन्होंने यह बताने के लिए काट दिया कि अच्छा तुम यह कहते हो तो फिर हम काटते हैं तो ताइफ के एक सरदार सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह ने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से विनती की कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हमारे बागों को क्यों नष्ट कर रहे हैं। यदि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हम पर विजय प्राप्त कर ली तो यह सब कुछ आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का हो जाएगा। नहीं तो अल्लाह की खातिर और रिश्तेदारी का सम्मान करते हुए आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ऐसा न करें। उसने यह विनती की कि अल्लाह के लिए रिश्तेदारी का सम्मान भी हम लोगों पर कीजिए और यह न कीजिए। कुरैश मक्का की बहुत सी रिश्तेदारियाँ ताइफ वालों के साथ थीं। यह न भी होती तो बहरहाल आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का अपना जो आदर्श चरित्र था वह यही था कि कठोरता नहीं करते थे। अतः सुफ़ियान की इस विनती पर उन बागों को आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने छोड़ दिया और नहीं काटा।

(उद्धृत अस-सीरतुन नबविया लि इन्न हिशाम पृष्ठ 793, अत-तरीक इलात ताइफ, दारुल कुतुबिल इल्मिया 2001) (उद्धृत शरहुल अल्लामतिज़ ज़रकानी अला मवाहिबिल लदुन्निया, भाग चौथा, पृष्ठ 10, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1996)

(उद्धृत हुनैन के युद्ध, अज़ बाशमील पृष्ठ 227 से 229, 242, नफीस एकेडमी) (दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 349, बज़्म इकबाल लाहौर)(अल-लौलौउल मकनून सीरत इनसाइक्लोपीडिया खंड 9 पृष्ठ 312, मकतबा दारुस्सलाम)

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्होम) आधे महीने या इससे भी अधिक समय तक ताइफ के निवासियों से युद्ध में व्यस्त रहे किंतु ताइफ वालों के हृदयों पर वास्तव में हुनैन की पराजय का ऐसा भय और आतंक छा

चुका था कि वे किले के अंदर से लड़ते रहे, बाहर नहीं निकले। इस दौरान उनका एक भी व्यक्ति घेराबंदी से बाहर आकर न लड़ा।

(तारीखुत तबरी खंड 2 पृष्ठ 171, दारुल कुतुबिल इल्मिया बैरुत 1987)

(उद्धृत हुनैन के युद्ध अज़ बाशमील पृष्ठ 244, नफीस एकेडमी)

यहाँ तक कि एक बार खालिद बिन वलीद ने मैदान में निकलकर सक्रीफ के बहादुरों को ललकारा और दंड युद्ध की चुनौती दी किंतु बार-बार की पुकार पर कोई भी बाहर न निकला यहाँ तक कि सक्रीफ के सरदार अब्दि यलील ने हज़रत खालिद को ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा। हममें से कोई भी तुम्हारे मुकाबले पर नहीं आएगा। हम अपने किले में सुरक्षित हैं और वर्ष भर के लिए हमारे पास भोजन और खुराक है। हमें कोई चिंता नहीं। उसी दौरान एक बार हज़रत यज़ीद बिन जमअह ने किले वालों से बात करने के लिए कहा कि यदि तुम मुझे सुरक्षा देते हो तो मैं एक बात करना चाहता हूँ। यह गारंटी दो कि तुम मुझे हानि नहीं पहुँचाओगे। मैं दूत के रूप में आना चाहता हूँ। उन्होंने सुरक्षा दी और कह दिया कि ठीक है हम सुरक्षा देते हैं। वह किले के निकट हुए किंतु उन्होंने विश्वासघात करते हुए उन पर तीर बरसाने आरंभ कर दिए और वह शहीद हो गए। यह इस युद्ध के पहले शहीद थे। यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के भांजे थे। उन्हें शहीद करने वाला हुज़ैल बिन अबी सलत था। वह उनको शहीद करने के बाद अहंकार से किले से बाहर निकला और उसका विचार था कि मुसलमान इस घटना से भयभीत हो चुके होंगे और कुछ नहीं कर सकेंगे किंतु जो ही वह किले के दरवाजे से बाहर निकला तो हज़रत यज़ीद बिन जमअह (रज़ियल्लाहु अन्हो) के भाई याकूब बिन जमअह जो किले के दरवाजे के निकट ही छिपे हुए थे उन्होंने उसको पकड़ लिया और पकड़कर नबी अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में प्रस्तुत करते हुए निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! यह मेरे भाई का हत्यारा है। अतः उसको मार डाला गया।

(दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) खंड 9 पृष्ठ 351 से 354, बज़्म इकबाल लाहौर)(हुनैन के युद्ध अज़ बाशमील पृष्ठ 229 से 230, नफीस एकेडमी)

यह विवरण अभी चल रही हैं। इनशा अल्लाह आगे और व्यक्त होंगी।

नमाज़ के बाद मैं दो अनुपस्थित जनाज़ा की नमाज़ भी पढ़वाऊँगा। पहला माननीय डॉक्टर सैयद शहाब अहमद साहिब का है जो आजकल कनाडा में थे। मूल रूप से भारत के थे। पिछले दिनों में छियानवे वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हो गए। निःसंदेह हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। दिवंगत वसीयत करने वाले थे। उनका एक पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। आगे भी उनकी संतान है। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के सहाबी हज़रत सैयद इरादत हुसैन साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु (प्रांत बिहार) के नवासे थे।

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम एस सी की। फिर बिहार विश्वविद्यालय मुज़फ्फरपुर से एम ए किया। बाद में ग्लासगो विश्वविद्यालय स्कॉटलैंड से उसी विषय में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। 1968 ई. में हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस-सालिस (रहमतुल्लाहि अलैहि) के आदेश पर कनाडा चले गए वहाँ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के रूप में नैदानिक मनोविज्ञान का विषय पढ़ाया। नौ वर्ष तक यह नैदानिक मनोवैज्ञानिक के रूप में व्यवसाय करते रहे। दिवंगत को विभिन्न समयों में भारत और कनाडा में समुदाय की सेवा की भी सुअवसर प्राप्त हुई। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) लंबे समय तक सस्काटन समुदाय के अध्यक्ष भी रहे। इससे पहले सचिव प्रचार के रूप में भी सक्रिय सेवा की सुअवसर प्राप्त हुई। फिर एडमंटन में सचिव प्रकाशन के अलावा प्रशिक्षण और शिक्षा के विभागों में सेवा अदा करते रहे। सफल अल्लाह की ओर आमंत्रित करने वाले थे। कई प्रतिज्ञापत्र (बैअत) करवाने की उनको सुअवसर प्राप्त हुई। समुदाय अहमदिया कनाडा का इतिहास अंग्रेजी भाषा में लिखा जा रहा है इसकी एक सीमा तक संशोधन की भी उनको सुअवसर प्राप्त हुई। सस्काटन कनाडा में कई अंतर-धार्मिक सम्मेलन आयोजित करवाने की सुअवसर प्राप्त हुई जिससे वहाँ के शिक्षित वर्ग तक समुदाय का संदेश पहुँचा। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को विभिन्न संस्थानों में इस्लाम और अहमदियत पर भाषण देने का भी अवसर मिला। विभिन्न पुस्तकालयों में समुदाय की पुस्तकें भी रखवाईं। एक विद्वान व्यक्तित्व के धनी थे। इस्लाम अहमदियत की पुष्टि में अंग्रेजी और उर्दू भाषा में आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के विभिन्न लेख भी समुदायी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा अन्य समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे। उनका एक महत्वपूर्ण कार्य प्रांत बिहार भारत का इतिहास अहमदियत को संकलित करना भी है। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की दो पुस्तकें हैं प्रांत बिहार के अहमदी सहाबा और प्रांत बिहार के अहमदी शहीद और कुछ आरंभिक निष्ठावान। यह दो पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं। अच्छी पुस्तकें हैं। प्रांत बिहार के

अहमदियों से निरंतर संपर्क किया और उनके हालात एकत्र किए और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की एक तीसरी पुस्तक "प्रांत बिहार में अहमदियत" भी पूर्ण हो चुकी है जो अंग्रेजी भाषा में है। एक पवित्र परहेज़गार वरिष्ठ और एक आदर्श अहमदी थे। सदैव इस्लामी आदेशों का पालन करना अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और खिलाफत से उनका गहरा श्रद्धा और निष्ठा का संबंध था। उनके पुत्र सैयद मुबारक कहते हैं कि संपूर्ण जीवन का उन्होंने केवल एक ही उद्देश्य बनाया और वह यह था कि अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना। अतः पाँचों समय की नमाज़ों के बहुत पाबंद थे। उपासना का एक विशेष शौक था। पढ़ने-लिखने और सीखने का भी उनको बहुत शौक था। जीवन के अंतिम दिनों में भी नई पुस्तकें खरीदते थे और वृद्धावस्था के बावजूद शुक्रवार की नमाज़ के लिए नियमित रूप से जाते और स्वर्गवास से एक सप्ताह पहले भी पश्चिमी कनाडा के सम्मेलन में शामिल हुए। प्रचार का बहुत शौक था और विभिन्न कस्बों में जाकर प्रचार किया करते थे। हर मामले में वर्तमान खलीफा से मार्गदर्शन लेते थे। उनके बड़े पत्न मुझे भी आया करते थे। पुस्तकें भी अपनी लिखी हुई भेजा करते थे। चंद्रा में सदैव सबसे आगे रहते। जीवन के अंतिम चार वर्षों में अपनी आय का पाँचवाँ भाग वसीयत में प्रस्तुत किया। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार फरमाए।

दूसरा उल्लेख है मुबारक खोखर साहिब लाहौर का जो इंशा अल्लाह खोखर साहिब के पुत्र थे। यह भी पिछले दिनों इक्यासी वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हो गए। निःसंदेह हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। दिवंगत भी वसीयत करने वाले थे। अफज़ल खोखर साहिब शहीद गुजराणवाला के सबसे छोटे भाई और अशरफ खोखर साहिब शहीद के चाचा थे। दो शहीद हैं उनके परिवार में। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अर-राबे (रहमतुल्लाहि अलैहि) के साथ विशेष संबंध था। उन्होंने ही उनकी शादी करवाई। उनका रिश्ता करवाया और खिलाफत से पहले भी उनके साथ बहुत घनिष्ठ संबंध था। हज़रत खलीफ़तुल मसीह अर-राबे (रहमतुल्लाहि अलैहि) की प्रेरणा पर ही आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कराची में अपना व्यवसाय आरंभ किया और बड़ा सफल व्यवसाय रहा। समुदायी दृष्टि से कोई ऐसी महत्वपूर्ण सेवा तो उनके सुपुर्द नहीं हुई किंतु समुदायी सेवा के लिए जब भी उनको बुलाया जाता यह तुरंत उपस्थित हो जाते। समुदाय और खिलाफत के साथ अत्यंत गहरी श्रद्धा रखते थे। अत्यंत मिलनसार, दयालु और लोगों की कठिनाई का अनुभव करने वाले थे, उसे दूर करने की कोशिश करते। जनकल्याण के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते। अपनी दिवंगत माता के नाम पर शैक्षणिक छात्रवृत्ति भी उन्होंने जारी किया हुआ था। पीछे रह जाने वालों में पत्नी के अलावा एक पुत्री और दो पुत्र शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार फरमाए।

(अल् फ़ज़ल इंटरनेशनल 3 अक्टूबर 2025, पृष्ठ 2 से 7)



130 वां जलसा सालाना क़ादियान

26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा। सय्यदना हज़रत हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने 130वां जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंजूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)



पृष्ठ 1 का शेष

अन्होमा) की परीक्षा ले और उनके उच्च स्तर के ईमान और उनकी कुर्बानियों के अमिट चिन्हों को विश्व के पृष्ठ पर अंकित कर दे और उनकी निष्ठा लोगों के लिए एक जीवंत उदाहरण का कार्य करे जो आने वाली पीढ़ियों की मृत धमनियों में भी जीवन का रक्त प्रवाहित कर दे। जब मदीना से कई पड़ाव दूर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पहुँच गए तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्होमा) को एकत्र किया और उन्हें बताया कि अल्लाह तआला का इरादा यह है कि तुम्हारा काफ़िर मक्का के एक बड़े सेना दल से सामना हो। अब बताओ कि तुम्हारी क्या राय है। मुहाजेरीन में से एक-एक सहाबी उठता और कहता हे अल्लाह के रसूल! परामर्श का क्या प्रश्न है। आगे बढ़िए और शत्रु का सामना कीजिए हम आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ हैं और अपने प्राणों को अर्पित करने के लिए तैयार हैं। किंतु जब भी कोई मुहाजिर बैठ जाता, आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) फिर फ़रमाते हे लोगो! मुझे परामर्श दो। अन्सार जो एक बड़ी समझदार और कुर्बानी करने वाली जाति थी उसके सदस्य अभी चुप थे क्योंकि वह समझते थे कि यदि हमने यह कहा कि हम लड़ने के लिए तैयार हैं तो चूँकि काफ़िर मक्का इन मुहाजेरीन के रिश्तेदार हैं, उनमें से कोई उनका पिता है, कोई पुत्र है, कोई भाई है, कोई मामा है, कोई चाचा है इसलिए हमारा उत्साह उन पर भारी पड़ेगा और वह समझेंगे कि उन्हें हमारे रिश्तेदारों को मारने में बड़ा आनंद आता है। किंतु जब रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने बार-बार फ़रमाया कि हे लोगो! मुझे परामर्श दो तो एक अन्सारी खड़े हुए और उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल! परामर्श तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को मिल रहा है। किंतु आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) जो बार-बार परामर्श माँग फरमा रहे हैं तो शायद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की मंशा हम अन्सार से है कि इस बारे में हमारी क्या राय है? रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया ठीक है। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल! जब हम मक्का मुकर्रमा में गए थे और हमें आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की बैअत (निष्ठा-प्रतिज्ञा) का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तो उस समय हमने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से प्रार्थना की थी कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मदीना पधार आइए। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार फ़रमाया और हमने यह समझौता किया कि यदि मदीना पर किसी शत्रु ने आक्रमण किया तो हम अपने प्राणों और अपनी संपत्ति को अर्पित करके आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की रक्षा करेंगे लेकिन यदि मदीना से बाहर सामना हुआ तो फिर हम पर कोई बंधन नहीं होगी। अब चूँकि मदीना से बाहर सामना हो रहा है, इसलिए शायद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का संकेत उस समझौते की ओर है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हमसे यह जानना चाहते हैं कि अब इस समझौते के अनुसार हमारी क्या राय है? रसूल-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया तुम सही समझते हो, मेरा संकेत उसी समझौते की ओर था। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल! इस समझौते का विचार छोड़ दीजिए। जब हमने यह समझौता किया था उस समय अभी हम पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की पूरी महिमा प्रकट नहीं हुई थी किंतु अब हमने देख लिया है कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की क्या महिमा है और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) कितनी बड़ी प्रतिष्ठा और सम्मान के नबी हैं। अब किसी समझौते का प्रश्न नहीं। हे अल्लाह के रसूल! कुछ पड़ावों की दूरी पर समुद्र है आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आदेश दें तो हम अपने घोड़े उसमें डालने के लिए तैयार हैं और हे अल्लाह के रसूल! यदि लड़ाई हुई तो अल्लाह की कसम हम आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दाएँ भी लड़ेंगे और बाएँ भी लड़ेंगे। आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी लड़ेंगे और शत्रु उस समय तक आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक नहीं पहुँच सकता जब तक वह हमारी लाशों को रौंदता हुआ न गुज़रे। यह वह निष्ठा थी जिसका उदाहरण अन्सार ने दिखाया और यह वह बलिदानी भावना थी जिसका उन्होंने प्रदर्शन किया। और फिर उन्होंने जिस प्रकार भेड़-बकरियों की तरह अपने सिरों को इस्लाम की राह में कटवाया उसके चिन्ह इतिहास के पन्नों पर ही नहीं हृदयों की गहराइयों पर इस प्रकार अंकित हैं कि प्रलय तक आने वाली पीढ़ियाँ उनकी शानदार कुर्बानियों को कभी विस्मृत नहीं कर सकतीं।

(तफ़सीर-ए-कबीर खंड 6 पृष्ठ 165, मुद्रित क़ादियान 2010)



क्या सूरात अल्-बकरह की आयत 206 में वर्णन किए गए हर्स (खेती) और नस्ल (संतान) की तबाही से DNA और RNA में छेड़छाड़ के नतीजे में इंसानों में होने वाले शारीरिक, मानसिक और ईमानी बदलाव की कोशिश के मायने निकाले जा सकते हैं?

इंसान को किस हद तक इस्लाम, कुरआन-ए-करीम और जमाअत के बारे में प्रश्न उठाने की इजाज़त है?

इस्लाम से पहले सूद की हरामी और हज के मौके पर औरतों और मर्दों के एक साथ नमाज़ पढ़ने के बारे में रहनुमाई।

क्या हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का अनावरण हिजाज़ के इलाके मक्का और मदीना में हुआ था?

फज़्र की नमाज़ के अज़ान और इक्रामत के बीच कितना अंतराल होता है?

रूह (आत्मा) के बारे में मार्गदर्शन

ईद-उल-अज़हा (बकरी-ईद) की कुर्बानी कितने दिनों तक की जा सकती है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसहिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क्रिस्त 48-49)

प्रश्न : कनाडा से एक दोस्त ने कुरआनी आयत **وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ** (अल-बकरह:206) अर्थात "जब वह साहिब-ए-इस्लियार हो जाए तो ज़मीन में दौड़ा-भागा करता है ताकि उसमें फ़साद करे और फसल और नस्ल को हलाक करे, जबकि अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।" से हर्स और नस्ल की तबाही से मुराद DNA और RNA में छेड़छाड़ करने के नतीजे में इंसानों में होने वाले शारीरिक, ज़हनी और ईमानी बदलाव की कोशिश के मायने निकालकर इस बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसहिहिल अज़ीज़ से रहनुमाई चाही। जिस पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब तिथि 24 नवंबर 2021 ई. में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित हिदायात फ़रमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : अल्लाह तआला के वादे के मुताबिक कुरआन-ए-करीम क़यामत तक के लिए बनी नौ इंसान की हिदायत और रहनुमाई के लिए नाज़िल किया गया है। इसलिए अल्लाह तआला कुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِّلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ (सूरत अल-हिज़्र:22) अर्थात "हमारे पास हर चीज़ के (गैर-महदूद) खज़ाने हैं। लेकिन हम उसे (हर ज़माने में उसकी ज़रूरत के मुताबिक) एक निर्धारित अंदाजे के मुताबिक नाज़िल करते हैं।"

साइंसी नुक्ता-ए-नज़र से आपने इस आयत के जो मायने बयान किए हैं, वह ठीक हैं। इनमें कोई हर्ज की बात नहीं। DNA में छेड़छाड़ के नतीजे में इंसानी तबाही के मज़मून को हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह तआला ने भी बहुत मौकों पर बयान फ़रमाया है। इसलिए हज़ूर रहमतुल्लाह ने अपनी अद्वितीय लेखनी 'इलहाम, अक्ल, इल्म और सच्चाई' में भी जीनियटिक इंजीनियरिंग के शीर्षक के तहत इंसानी तख़लीक में इस क्रिस्म की मनफ़ी छेड़छाड़ की कोशिश के बारे में दुनिया के साइंसदानों और हुकूमतों को सचेत फ़रमाया है।

इसी तरह हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने भी अपने-अपने वक्तों में इस आयत की जो निहायत बसीरत अफ़रोज़ तफ़ासीर फ़रमाई हुई हैं, उनमें भी इस क्रिस्म की मुनफ़ी इंसानी तदबीर इस्लियार करने के बारे में इज़ार फ़रमाया गया है। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस आयत की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं: "ऐसे लोगों की हालत यह होती है कि जब उन्हें बादशाहत मिल जाती है अर्थात वह खुदा तआला की पैदा की हुई ताकतों से काम लेकर हुकूमत पर क़ाबिज़ हो जाते हैं तो बजाए इसके कि रिआया और मुल्क की खिदमत करें बजाए इसके कि लोगों के दिलों में सकीनेत और इत्मीनान पैदा करें वह ऐसी तदबीर इस्लियार करनी शुरू कर देते हैं जिनसे क़ौमों से, कबीले कबीलों से और एक मज़हब के मानने वाले दूसरे मज़हब के मानने वालों से लड़ने-झगड़ने लग जाते हैं और मुल्क में तवाइफ़ुल मुलूकी की हालत पैदा होती है। इसी तरह वह ऐसे तरीके इस्लियार करते हैं जिनसे मुल्क की तमदुनी और अख़लाकी हालत तबाह हो जाती है और

आइंदा नस्लें बेकार हो जाती हैं। हर्स के लफ़ज़ी मायने तो खेती के हैं परंतु यहाँ हर्स का लफ़ज़ इसतआरतन वसीअ मायनों में इस्तेमाल हुआ है। और बताया गया है कि जितने ज़राए मुल्क की अर्थितक हालत को बेहतर बनाने वाले होते हैं उन ज़राए को इस्लियार करने की बजाए वह ऐसे क़वानीन बनाते हैं जिनसे तमदुन तबाह हो। इक्रिसाद बर्बाद हो। माली हालत में तरक्की न हो। इस तरह वह नस्ल-ए-इंसानी की तरक्की पर तब्बर रख देते हैं। और ऐसे क़वानीन बनाते हैं जिनसे आइंदा पैदा होने वाली नस्लें अपनी ताकतों को खो बैठती हैं। और ऐसी तालीमात जिनको सीखकर वह तरक्की कर सकती हैं उनसे महरूम हो जाती हैं।"

(तफ़सीर कबीर भाग 2 पृष्ठ 453,454)

इसी तरह हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस-सालिस रहमहुल्लाह तआला ने भी अपने खुतबात-ए-जुमा तिथि 28 जुलाई 1972 ई. और 11 अगस्त 1972 ई. में सूरात अल-बकरह की आयत नंबर 206 की तशरीह में इंसान को अता होने वाली खुदादाद इस्तेदादों और ताकतों के गलत और मुफ़सिदाना इस्तेमाल को नौ-ए-इंसानी के लिए मुज़रर करार देते हुए इसके नतीजे में हासिल होने वाली अल्लाह तआला की नाराज़गी से बनी नौ इंसान को मुतनब्बह फ़रमाया है। हज़ूर रहमहुल्लाह तआला के यह दोनों खुतबात 'खुतबात-ए-नासिर' जिल्द चहारम में शाय हो चुके हैं। आप वहाँ से उनका मुताला कर सकते हैं।

प्रश्न : अमरीका से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसहिहिल अज़ीज़ की खिदमत-ए-अक्दस में तहरीर किया कि इंसान को किस हद तक इस्लाम, कुरआन-ए-करीम और जमाअत के बारे में प्रश्न उठाने की इजाज़त है। मज़ीद यह कि मैंने अपने मुरब्बी साहिब से इस्लाम से पहले सूद की हरामी के बारे में, निज़ हज के मौके पर औरतों और मर्दों के एक साथ नमाज़ पढ़ने के बारे में प्रश्न किया लेकिन मुरब्बी साहिब ने इन प्रश्नों का तसल्लीबख़्श जवाब नहीं दिया। इसी तरह इस दोस्त ने लज़ा की हज़ूर अनवर के साथ एक मुलाकात में एक प्रश्न पर हज़ूर अनवर के जवाब कि "मज़हब के मामले में क्यों और किस लिए का प्रश्न नहीं है।" का भी ज़िक्र करके इस बारे में हज़ूर अनवर से रहनुमाई चाही है। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मकतूब तिथि 26 नवंबर 2021 ई. में इस प्रश्न के बारे में दर्ज़-ज़ैल तफ़सीली हिदायात फ़रमाई। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर : इस्लाम ने ज़्यादती-ए-इल्म के लिए प्रश्न करने की इजाज़त दी है। जैसा कि फ़रमाया: **"فَسَلُّوا أَهْلَ الدِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ"** (अन-नहल:44) अर्थात "अगर तुम नहीं जानते तो अहले ज़िक्र से पूछ लो।"

लेकिन कज-बहसी की ख़ातिर लगाव, बेहूदा और बे-अदबी वाले प्रश्न करने से अल्लाह तआला ने मुन्ही फ़रमाया है। इसलिए फ़रमाया: **"يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبَدِّلَكُمْ تَسْؤُكُمْ"** (अल-माइदा:102) अर्थात "ऐ वह लोग जो ईमान लाए हो! ऐसी चीज़ों के मुताल्लिक प्रश्न न किया करो कि अगर वह तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएँ तो वह तुम्हें तकलीफ में डाल दें।" इसी तरह फ़रमाया: **"أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلُوا مُوسَى مِنْ قَبْلُ"** (अल-बकरह:109) अर्थात "क्या तुम अपने रसूल से उसी तरह प्रश्न करना

चाहते हो जिस तरह (इससे) पहले मूसा से प्रश्न किए गए थे।"

इसलिए सहाबा-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रश्न करने के बारे में बहुत ज़्यादा मुहतात थे। वह बयान करते हैं कि हम खुद प्रश्न न करते बल्कि इंतज़ार करते थे कि कोई अराबी आए और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रश्न पूछे ताकि हम वह बातें सुनकर अपना इल्म बढ़ा लें। फिर हदीस में आता है कि अल्लाह तआला सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की इस इल्मी तिशनगी को इस तरह दूर फरमा देता कि बहुत वक्त हज़रत जिब्रील को इंसान की शक्ल में भेजता और वह हज़ूर से प्रश्न करते और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन प्रश्नों के जवाब देते। जिससे सहाबा अपनी इल्मी प्यास बुझा लेते। (सहीह बुखारी, किताब तफ़सीर अल-कुरआन, बाब कौलिही इन्नल्लाहा इंदहू इल्मुस साअह)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम प्रश्न करने के बारे में फ़रमाते हैं: "बहुत लोग ऐसे होते हैं कि उनके दिल में एक शुबहा पैदा होता है और वह उसको निकालते नहीं और पूछते नहीं। जिससे वह अंदर ही अंदर नशो-ओ-नुमा पाता रहता है और फिर अपने शकूक और शुबहात के अंडे-बच्चे दे देता है और रूह को तबाह कर देता है। ऐसी कमज़ोरी निफ़ाक तक पहुँचा देती है कि जब कोई अमर समझ में न आवे तो उसे पूछा न जाए और खुद ही एक राय कायम कर ली जाए। मैं इसको दाखिल-ए-अदब नहीं करता कि इंसान अपनी रूह को हलाक कर ले। हाँ यह सच है कि ज़रा-ज़रा सी बात पर प्रश्न करना भी मुनासिब नहीं, इससे मुन्ही फ़रमाया गया है।" (अल-हकम जिल्द 7, नंबर 13, तिथि 10 अप्रैल 1903 ई., पृष्ठ 1)

पस प्रश्न करना तो मुन्ही नहीं और अगर कोई बात समझ न आए तो ज़रूर पूछनी चाहिए लेकिन हर बात में बहस और तकरार के लिए प्रश्न दर प्रश्न की आदत बना लेना भी ठीक नहीं।

फिर यह बात भी मद-ए-नज़र रहनी चाहिए कि कुरआन-ए-करीम खुदा तआला का कलाम और उसकी तरफ से नाज़िल होने वाली तालीमात पर मबनी किताब है। और यह हकीकत है कि खुदा तआला के कलाम की हिकमतों और उसकी गहराइयों को समझना हर इंसान के बस की बात नहीं। हम देखते हैं कि जिस तरह दुनिया में इंसानी कोशिशों से रोज़-ब-रोज़ नई-नई तहकीकात सामने आती रहती हैं उसी तरह अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल की गई तालीमात और उसके अहकामात के नए-नए पहलू और हिकमतें भी हर ज़माने में खुलती रहती हैं। इसलिए अल्लाह तआला कुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है:

"وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ"

(अल-हिज़्र:22) अर्थात "हमारे पास हर चीज़ के (गैर-महदूद) खज़ाने हैं। लेकिन हम उसे (हर ज़माने में उसकी ज़रूरत के मुताबिक) एक मुअय्यन अंदाजे के मुताबिक नाज़िल करते हैं।"

यहाँ अल्लाह तआला ने हमें यह बात भी समझा दी कि कुरआन-ए-करीम चूंकि एक दाइमी कलाम है और इसमें क़यामत तक के लिए इंसानों की फलाह, हिदायत और रहनुमाई के लिए तालीमात मौजूद हैं, जिनका हर ज़माने में हस्ब-ए-ज़रूरत इस्तिख़राज होता रहेगा। इसलिए ज़रूरी नहीं कि एक वक्त में इसकी सारी बातें किसी इंसान को समझ आ जाएं।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह एक कामिल किताब है जो नौ-ए-इंसानी को दी गई है और हमेशा के लिए उनकी रहनुमाई करेगी। कभी ऐसा नहीं होगा कि उन्हें कुरआन के अलावा किसी और हिदायत और रहनुमाई की ज़रूरत पेश आए। कुरआन-ए-करीम ने आइंदा की खबरें दी हैं और हर सदी के मुताल्लिक कुरआन-ए-करीम में पेशगोइयाँ पाई जाती हैं जो अपने वक्तों पर ज़ाहिर होती हैं... इस कामिल किताब के नज़ूल पर अब करीब-करीब चौदह सौ साल गुज़र चुके हैं। इसका माज़ी भी अमलन यह बताता है कि मुस्तकबिल में भी खुदा तआला इसके ज़रिए से इंसान के साथ यही सुलूक करेगा कि नई से नई बातें कुरआन-ए-करीम की पेशगोइयों के मुताबिक ज़ुहूर में आएँगी और पेशगोइयाँ पूरी होंगी, जब नए मसाइल पैदा होंगे कुरआन-ए-करीम की नई तफ़सीर खुदा तआला अपने बंदों को सिखाएगा, अपने मुक़र्रबीन और अपने मबूब बंदों को और फिर वह इन मसाइल को हल करेंगे।" (खुत्बा-ए-जुमा फ़रमूदह 1 जुलाई 1977 ई., खुतबात-ए-नासिर जिल्द हफ़्तम, पृष्ठ 113) कुरआन-ए-करीम एक और मकाम पर इस बारे में इस तरह हमारी रहनुमाई फ़रमाता है:

"هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا

يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرُّسُلُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ"

(आले-इमरान:8) अर्थात "वही है जिसने तुझ पर किताब उतारी, उसी में से मुहकम आयतें भी हैं, वह किताब की माँ हैं। और कुछ दूसरी मुतशाबेह (आयतें) हैं। पस वह लोग जिनके दिलों में कजी है वह फितना चाहते हुए और उसकी तावील की खातिर उसी में से उसकी पैरवी करते हैं जो बाहम मुशाबेह है, हालांकि अल्लाह के सिवा और उनके सिवा जो इल्म में पुख्ता हैं कोई उसकी तावील नहीं जानता। वह कहते हैं हम इस पर ईमान ले आए, सब हमारे रब की तरफ से है। और अक्लमंदों के सिवा कोई नसीहत नहीं पकड़ता।"

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं: "मेरे नज़दीक हर शख्स के लिए कोई हिस्सा किसी मुतकल्लिम के कलाम का मुहकम होता है अर्थात जो खूब तौर से समझ आ जाता है और कोई हिस्सा ऐसा होता है कि उसके मायने समझने में दिक्कतें पेश आती हैं और बूझ इसके मुजमल रखने के कई मायने हो सकते हैं। हर शख्स पर यह हालत गुज़रती है। अल्लाह ने इसके मुताल्लिक यह राह दिखाई है कि जो आयतें ऐसी हैं कि जिनकी खूब समझ आ जाए और तजरबा व अक्ल व मुशाहिदा उसके खिलाफ न हो वह तो मुहकम समझ लो। फिर वह आयतें जिनके मायने समझ में नहीं आए उनके मायने ऐसे न करे जो उन मुहकम आयतों के खिलाफ हों... खुलासा यह है कि बहुत आयतें खूब समझ में आ जाती हैं और बहुत के मायने जल्दी नहीं खुलते। इसके लिए एक गुर बताया है... फ़रमाता है जिनको यह ख्वाहिश है कि वह रासिख फिल इल्म हो जाएँ वह मुहकमों को मआ मान लेते और मुतशाबेह का इंकार नहीं करते बल्कि "كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا" कहते हैं। अर्थात दोनों परवरदिगार की तरफ से मानते हैं। पस वह मुतशाबेह के ऐसे मायने नहीं करते जो मुहकम के खिलाफ हों बल्कि हर जगह "كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا" का उसूल पेश-ए-नज़र रखते हैं। कोई आयत हो उसके ख्वाह कितने ही मायने हों मगर ऐसे मायने न करने चाहिए जो मुहकम के खिलाफ हों। दूसरा तरीका दुआ का है वह यूँ बताया कि "رَبَّنَا لَا تَرْعُ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا" अर्थात "ऐ हमारे रब हमें कजी से बचा ले।" अर्थात कुरआन के मायने अपनी ख्वाहिशों के मुताबिक न करें।"

(हकाएकुल फुरकान भाग अव्वल, पृष्ठ 447,448)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अस-सालिस रहमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "कुरआन अज़ीम में मुतशाबेहात भी हैं जो तावील की मुहताज हैं। इन मुतशाबेहात की बहुत सी बातें बहुत इसतआरात के परदे में महजुब हैं और अपने-अपने वक्त पर आकर खुलती हैं और जैसा कि मैंने शुरू में बताया था यह कुरआन-ए-करीम की अज़मत है, बहुत बड़ी अज़मत कि वह एक ऐसा कलाम है जिसने क़यामत तक के लिए इंसान की बेहतरी के सामान कर दिए। हर सदी का, हर ज़माने का, हर इलाके का, हर मुल्क का इंसान कुरआन-ए-करीम का मुहताज और उसकी एहतियाज से वह कभी भी आज़ाद नहीं हो सकता।"

(खुत्बा-ए-जुमा फ़रमूदह 1 जुलाई 1977 ई., खुतबात-ए-नासिर जिल्द हफ़्तम, पृष्ठ 114,115)

अतः ऊपर वर्णित इरशादात से हमें यह रहनुमाई मिलती है कि दीनी मामलात में से अगर कोई बात समझ न आए और किसी दूसरे के जवाब से भी तसल्ली न मिले तो ऐसी सूरात में एक तो कुरआन व हदीस की मुहकम सदाकत पर खुद गौर व तदब्बुर करके इन मसाइल का हल तलाश करने की कोशिश करनी चाहिए और दूसरा अल्लाह तआला के हुज़ूर आजिज़ाना दुआ करते हुए और उसके आगे झुकते हुए इन मसाइल के बारे में उसी से रहनुमाई तलब करनी चाहिए।

बाकी जहाँ तक आपके प्रश्नों का ताल्लुक है तो लज़्जा इमाइल्लाह जर्मनी के साथ मुलाकात में जो मैंने सैक्रेटरी साहिबा नासिरात को नासिरात की तरबीयत की तरफ तवज्जोह दिलाते हुए यह कहा था कि "मज़हब के मामले में क्यों और किस लिए का प्रश्न नहीं है। ईमान बिलग़ैब बचपन में ही उनके ज़हनों में डालना चाहिए।" इसका भी यही मतलब था कि मज़हब के मामले में बहुत अमूर बड़े वाजेह होते हैं जो आसानी से समझ आ जाते हैं लेकिन बहुत अमूर को अल्लाह तआला ने अपने ला-महदूद इल्म की बिना पर ईमान बिलग़ैब के परदे में रखा है, जिनकी हकीकत को समझना या उनका इहाता करना इंसान के बहुत ही महदूद इल्म के बस की बात नहीं। लिहाज़ा मज़हबी अहकामात के मामले में जिस तरह

हम आसानी से समझ आ जाने वाले अहकामात की पाबंदी करते और उनको अपनी जिंदगियों का हिस्सा बनाते हैं, उसी तरह हमारा यह भी फर्ज है कि उन अहकामात की भी उसी तरह इताअत करें जिनका ईमान बिलगैब के साथ ताल्लुक है और उनके बारे में बला-वजह अपने ज़हनों में शकूक व शुबहात को जगह न दें।

इस्लाम से पहले सूद की हरामी निज़ हज के मौके पर मर्दों और औरतों का एक साथ नमाज़ वगैरह पढ़ने के बारे में आपके प्रश्नों का जवाब यह है कि यह बात दुरुस्त है कि इस्लाम से पहले यहूद में भी सूद की मुमानिअत थी। इसलिए कुरआन-ए-करीम फ़रमाता है कि हमने यहूद के सूद लेने की वजह से जिससे उन्हें रोका गया था, उन पर वह पाकीज़ा चीज़ें भी हराम कर दीं जो उससे पहले उनके लिए हलाल की गई थीं। (अन-निसा:162)

अहदनामा कदीम की बहुत सी किताबों में भी सूद की मुमानिअत बयान हुई है। लेकिन इसतेसना में गैर-इसराइली और परदेसियों से सूद लेने की इजाज़त भी दी गई है। इसलिए लिखा है कि "तुम अपने भाई से सूद वसूल न करना, ख्वाह वह रुपयों पर, अनाज पर या किसी ऐसी शय पर हो जिस पर सूद लिया जाता हो। तुम चाहो तो परदीसियों से सूद वसूल करना लेकिन किसी इसराइली भाई से नहीं।"

(इस्तिसना 23/20-21)

कुरआन-ए-करीम के बयान से तो यही मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने यहूद पर भी सूद को हराम करार दिया था लेकिन उन्होंने बाद में जिस तरह खुदा तआला के दूसरे अहकामात में अपनी मर्जी से तहरीफ की इस हुकम में भी तहरीफ करते हुए गैर-यहूद से सूद लेने का सिलसिला शुरू कर दिया। जिसकी वजह से वह अज़ाब-ए-इलाही के मर्द हुए।

इसके मुकाबिल पर इस्लाम में जिस तरह दूसरी बुराइयों की बड़ी तफसील और वज़ाहत के साथ मुमानिअत फ़रमाई गई है, सूद के बारे में भी कुरआन-ए-करीम ने खोल-खोल कर उसकी हरमत बयान फ़रमाई और सूदी लेन-देन की कबाहतों को हर पहलू से बयान करते हुए उसे अल्लाह और उसके रसूल के साथ जंग करार दिया और मुसलमानों को उससे कुल्लियतन इज्तिनाब करने की हिदायत फ़रमाई। फिर आनहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी मुख्तलिफ मौकों पर सूद की शनाअत बयान फ़रमाई और सूद खाने वाले, खिलाने वाले, उसकी दस्तावेज़ात तैयार करने वाले और उसकी गवाही देने वाले पर लानत की। (सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाकात, बाब लअनि आकिलिर रिबा व मुअक्किलिही) तथा अपने खुल्बा हज्जतुल विदा के मौके पर सूद की हरमत बयान करते हुए पुराने तमाम सूदी लेन-देन के खाल्मे का एलान फ़रमाया। (सुनन अबी दाऊद, किताब अल-बयूअ, बाब फी वज़उर रिबा) इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुलाम-ए-सादिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी सूदी लेन-देन के गुनाह की सनगीनी बयान करते हुए फ़रमाया अल्लाह तआला ने सूअर का खाना बहालते-ए-इज़तिरार जाएज़ रखा है मगर सूद के लिए नहीं फ़रमाया कि बहालते-ए-इज़तिरार जाएज़ है।

(अखबार बदर कादियान नंबर 5, अंक 7, तिथि 6 फ़रवरी 1908 ई., पृष्ठ 6)

खाना काबा में औरतों और मर्दों की नमाज़ के लिए अलग-अलग जगह मुक़रर होती है। अवाइले-ए-इस्लाम में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहद-ए-मुबारक में भी औरतें मर्दों से अलग इस तरह नमाज़ पढ़ती थीं कि उनकी सफ़े मसजिद में सबसे आखिर पर होती थीं, उनके आगे बच्चों की सफ़ होती और फिर बच्चों के आगे मर्दों की सफ़े होती थीं।

इसी तरह खाना काबा के तवाफ के वक्त भी अगरचे मर्द व खवातीन तवाफ एक साथ ही करते थे। लेकिन औरतें मर्दों से अलग रहती थीं। इसलिए हदीस में आता है कि जब इब्ने हिशाम (गवर्नर मक्का) ने औरतों को मर्दों के साथ तवाफ करने से मुन्ही किया तो अता बिन अबी रबाह ने उससे कहा कि तुम उन्हें कैसे रोक सकते हो जब कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अज़वाज ने मर्दों के साथ तवाफ किया। (इब्ने जरीज कहते हैं) मैंने (अता से) पूछा, यह बात परदे की आयत नाज़िल होने के बाद की है या पहले की? इस पर उन्होंने कहा कि हाँ मुझे अपने अकीदे की क़सम, मैंने परदे की आयत नाज़िल होने के बाद उनको इस तरह तवाफ करते देखा है। (इब्ने जरीज कहते हैं) मैंने कहा औरतें मर्दों से कैसे मिल-जुल जाती थीं? उन्होंने कहा औरतें मिलती-जुलती न थीं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा लोगों से एक तरफ जुदा तवाफ करतीं, उनसे मिला-जुला नहीं करती थीं। एक औरत ने उनसे कहा, उम्मुल मोमिनीन चले हज़रे

असवद को बूसा दें। उन्होंने कहा तुम जाओ और इंकार कर दिया। औरतें रात को इस तरह बाहर निकलतीं कि पहचानी न जातीं और मर्दों के साथ तवाफ करतीं। अलबत्ता जब बैतुल्लाह में दाखिल होने लगतीं तो बाहर ठहर जातीं और मर्दों को बाहर कर दिया जाता तो वह अंदर जातीं।

(सहीह बुखारी, किताब अल-हज, बाब तवाफिन निसाई मअर रिजाल)

इलावा ज़ैन इब्तिदा में शरीअत ने हज और उमरा वगैरह में औरत के साथ उसके महरम के होने की जो शर्त रखी थी, उसमें एक हिक्मत यह भी नज़र आती है कि हज और उमरा के मौके पर जब कि लोगों का बहुत ज़्यादा हुजूम होता है तो इस हुजूम में औरत का महरम उसका हाथ वगैरह पकड़कर उसे दूसरे लोगों से अपनी पनाह में रख सकता है।

प्रश्न : तियोनस से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की पवित्र सेवा में लिखा कि कुरआन-ए-करीम और बाइबिल से साबित होता है कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का भी आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की तरह हिजाज़ के इलाके मक्का और मदीना में ही अनावरण हुआ था। इस बारे में हज़ूर का क्या कथन है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 24 नवंबर 2021 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: आप ने अपने दृष्टिकोण के पक्ष में कुरआन-ए-करीम की कुछ आयतों से जो तर्क प्रस्तुत करने की कोशिश की है वह आप की रुचिपूर्ण बातें हैं और उनका इतिहास से उस तरह पुष्टि नहीं मिलती। साथ ही आप ने कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को आपस में घुला-मिला दिया है।

'वादी' शब्द से आप को भ्रम पैदा हुई है और आप ने उससे अर्थ सिर्फ मक्का और हुदैबिया की वादी ही लिया है और सूरत अल-क़सस में उल्लिखित 'मिन शातिअल वादिल ऐमन' में भी आप की नज़र में मक्का की वादी ही अभिप्रेत है। हालांकि कुरआन-ए-करीम में यह शब्द कई और स्थानों के लिए भी प्रयोग हुआ है। और सूरत अल-क़सस की आयत 'मिन शातिअल वादिल ऐमन' में उल्लिखित स्थान का संबंध हज़रत मूसा के उस घटना से है जब आप अपने ससुर से किए गए समझौते की पूर्ति के बाद अपने परिवार के साथ मदन से किसी दूसरी जगह जा रहे थे कि रास्ते में अल्लाह तआला ने आप से वार्तालाप करके आप को रिसालत के पद पर सुशोभित फ़रमाया और आप को फिरऔन की ओर मिस्र जाने का आदेश दिया।

फिर सुलह-ए-हुदैबिया की घटना से आप ने जो तर्क प्रस्तुत किया है, वह भी सही नहीं है क्योंकि सुलह-ए-हुदैबिया के अवसर पर तो हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) मक्का में प्रवेश ही नहीं हुए थे। बल्कि काफ़िरों-ए-मक्का से हुए समझौते के अनुसार हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हुदैबिया से ही वापस मदीना आ गए थे। और समझौते के अनुसार उससे अगले साल आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उमरा के लिए मक्का तशरीफ ले गए थे। हां यह बात सही है कि इस यात्रा में मक्का की विजय की नींव पड़ गई थी और अल्लाह तआला ने सुलह-ए-हुदैबिया के बाद वापसी की यात्रा में हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को सूरत अल्-फतह के अवतरण के साथ मक्का की विजय की शुभ सूचना प्रदान फ़रमाई थी और सुलह-ए-हुदैबिया को स्पष्ट विजय भी घोषित किया था।

फिर वादी-ए-कनआन और वादी-ए-मक्का एक कैसे हो सकती हैं? यह ठीक है कि वादी-ए-कनआन को भी कुरआन-ए-करीम ने पवित्र भूमि ही कहा है। लेकिन यहां तो हज़रत मूसा के साथियों ने प्रवेश करने से इंकार कर दिया था और अल्लाह तआला ने दंड के रूप में उस कौम को चालीस साल तक उस पवित्र भूमि से वंचित कर दिया यहां तक कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) भी अपने अनुयायियों की अवज्ञा के कारण इस पुरस्कार से वंचित रहे। लेकिन इसके विपरीत हमारे स्वामी एवं आका हज़रत पवित्र मुहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को अल्लाह तआला ने एक ओर बुखार और अन्य महामारी वाली बस्ती 'यसरिब' को 'मदीनतुर रसूल' के नाम से नए संगठन और प्रबंध के साथ बसाने की सामर्थ्य प्रदान फ़रमाई और फिर अल्लाह तआला ने हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के आगमन की बरकत से उसके बुखार और महामारी वाली विषैली वातावरण को सुहावने जलवायु में परिवर्तित फरमा दिया। और दूसरी ओर अल्लाह तआला ने आप को अपने दस हजार जाननिहाल और अत्यंत आज्ञाकारी पवित्र लोगों के जुलूस में एक महान विजेता के रूप में मक्का की पवित्र भूमि में प्रवेश कराया। इसलिए इन असाधारण दिव्य कृपाओं और प्रभावों से परिपूर्ण पवित्र भूमि मक्का मुकर्रमा का कनआन की बस्ती से क्या मुकाबला हो

सकता है। और हम इन दोनों स्थानों को एक कैसे घोषित कर सकते हैं?

आप ने अपने पत्र में हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथियों के वादी-ए-कनआन में प्रवेश करने से इंकार करने और पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सहाबा के हज़ूर की सेवा में निवेदन करने कि 'हम बनी इस्राईल की तरह यह नहीं कहेंगे कि तू और तेरा रब जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। बल्कि हम आप के साथ होकर लड़ेंगे', की घटना को सुलह-ए-हुदैबिया के अवसर की लिखा है जबकि इतिहास से सिद्ध है कि यह घटना गज़वा-ए-बदर की है।

इसलिए जैसा कि मैं ने लिखा है कि यह सब आप की रुचिपूर्ण बातें हैं, जिनमें से अधिकांश की ऐतिहासिक दृष्टि से कोई समानता नहीं ठहरती। हमेशा याद रखें कि कुरआन-ए-करीम की ऐसी व्याख्या और विवेचना नहीं करनी चाहिए जो स्वयं कुरआनी शिक्षा, कुरआन-ए-करीम में वर्णित ऐतिहासिक प्रमाणों, पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सुन्नत और पैगंबरी हदीसों में वर्णित शिक्षाओं के विपरीत हो।

प्रश्न : पाकिस्तान से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की पवित्र सेवा में पूछताछ भेजी कि नमाज-ए-फ़ज़्र के अज़ान और इक्रामत के बीच कितना अंतराल होता है? साथ ही यह कि सहीह बुखारी की एक हदीस से पता चलता है कि जितना समय सूरत अल-बक्रा की तिलावत में लगता है उतना समय अज़ान और इक्रामत के बीच होना चाहिए। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 14 दिसंबर 2021 ई. में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित कथन फरमाए। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: मेरे ज्ञान में तो सहीह बुखारी की कोई ऐसी हदीस नहीं है जिसमें यह उल्लेख हो कि नमाज-ए-फ़ज़्र के अज़ान और इक्रामत के बीच इतना अंतराल होना चाहिए जितना समय सूरत अल-बक्रा की तिलावत करने में लगता है। आप ने बुखारी की जिस हदीस का उल्लेख किया है वह मुझे पहले भेजे फिर उस बारे में कोई स्पष्टता की जा सकती है।

इसके अलावा हम यहां मसजिद मुबारक में सच्ची भोर (अज़ान-ए-फ़ज़्र) से नमाज तक मौसम के अनुसार विभिन्न समयों में 25 से 40 मिनट तक का अंतराल रखते हैं। और फ़ज़्र के अज़ान का समय आम तौर पर सूर्योदय से एक घंटा बीस मिनट से एक घंटा तीस मिनट पहले होता है। और सारी दुनिया के समशीतोष्ण क्षेत्रों में आम तौर पर यही सिद्धांत चलता है।

इस युग में विज्ञान की उन्नति और आधुनिक उपकरणों के आविष्कार के कारण भोर का समय, सूर्य के ढलने का समय और सूर्योदय एवं सूर्यास्त के बिल्कुल निश्चित समय का ज्ञान हो जाता है जो पुराने ज़माने में संभव नहीं था।

इस्लाम ने नमाजों के लिए सिर्फ एक निश्चित समय का कठोर और स्थिर सिद्धांत निर्धारित नहीं फ़रमाया बल्कि अपने अनुयायियों की सुविधा के लिए सभी नमाजों के लिए एक अवधि निर्धारित फ़रमा दी कि अमुक से अमुक समय तक यह नमाज पढ़ी जा सकती है। ताकि लोग अपनी सुविधा के अनुसार उन समयों के दौरान सामूहिक नमाज का समय निर्धारित कर सकें।

इसलिए हज़रत अबू हुदैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: हर नमाज का एक प्रारंभिक समय है और एक अंतिम समय। जुहर की नमाज का प्रारंभिक समय सूरज का ढलना है और अंतिम समय जब अस्त्र का समय शुरू हो जाए। और अस्त्र का प्रारंभिक समय जब यह समय शुरू हो जाए और अंतिम समय जब सूरज पीला हो जाए। मगरिब का प्रारंभिक समय सूर्यास्त पर है और अंतिम समय संध्या की लाली का लुप्त होना है। और इशा का प्रारंभिक समय संध्या की लाली के लुप्त होने पर और अंतिम समय आधी रात तक है और फ़ज़्र का प्रारंभिक समय सच्ची भोर के प्रकट होने पर है और अंतिम समय सूरज का उदय होना है। (सुनन तिर्मिज़ी, किताब अस-सलाह, अध्याय: नमाज के समय के बारे में जो कुछ आया है) इसी तरह सुलेमान बिन बुरैदा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से नमाजों का समय पूछा। हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उससे फ़रमाया कि तुम दो दिन हमारे पास रहो। फिर हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) को आदेश दिया और उन्होंने भोर के प्रकट होते ही तकबीर कही और हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने फ़ज़्र की नमाज पढ़ाई। फिर जब सूरज ढल गया तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत बिलाल (रज़ियल्लाहु

अन्हु) को तकबीर कहने का आदेश दिया और फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जुहर की नमाज पढ़ाई। फिर उन्हें उस समय आदेश दिया जब सूरज सफ़ेद था और अस्त्र की नमाज अदा फ़रमाई। फिर सूरज के अस्त होने पर उन्हें आदेश दिया और नमाज-ए-मगरिब अदा फ़रमाई। फिर जब संध्या की लाली लुप्त हो गई उन को आदेश दिया और नमाज-ए-इशा अदा फ़रमाई। फिर दूसरे दिन उन को आदेश दिया और नमाज-ए-फ़ज़्र प्रकाश में अदा फ़रमाई और नमाज-ए-जुहर बहुत ठंडे समय में अदा फ़रमाई। फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने नमाज-ए-अस्त्र अदा फ़रमाई जबकि सूरज की सफ़ेदी मौजूद थी लेकिन पहले दिन से देरी फ़रमाई। फिर संध्या की लाली लुप्त होने से पहले नमाज-ए-मगरिब अदा फ़रमाई। फिर जब रात का एक तिहाई भाग बीत गया तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत बिलाल (रज़ियल्लाहु अन्हु) को आदेश दिया तो उन्होंने नमाज-ए-इशा की तकबीर कही और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने नमाज-ए-इशा अदा फ़रमाई। इसके बाद आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने नमाजों का समय पूछने वाले के बारे में पूछा और उससे फ़रमाया कि तुम्हारी नमाजों का समय उन समयों के बीच का है जो तुमने देखे हैं। (सुनन नसाई, किताब अल-मवाक़ीत, अध्याय: मगरिब का प्रारंभिक समय)

नमाज-ए-फ़ज़्र के समय के बारे में सहीह हदीसों से पता चलता है कि हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आम तौर पर भोर के प्रकट होने के इतने समय बाद फ़ज़्र की नमाज पढ़ाते थे जिस समय में एक इंसान पचास-साठ आयतें पढ़ लेता है। और फिर हज़ूर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) नमाज-ए-फ़ज़्र में आम तौर पर साठ से सौ आयतों की तिलावत फ़रमाया करते थे और जब नमाज से निवृत्त होते तो अभी इतना अंधेरा होता था कि निकट मौजूद इंसान तो पहचाना जाता था लेकिन दूर का इंसान नहीं पहचाना जाता था। (सहीह बुखारी, किताब मवाक़ीतिस सलाह, अध्याय: अस्त्र का समय। अध्याय: फ़ज़्र का समय)

प्रश्न : कनाडा से एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ की पवित्र सेवा में लिखा कि शुक्राणु में जो लैक्टोबैसिलस नामक जीवाणु पाया जाता है, जो एक प्रकार की बिजली या रोशनी भी पैदा कर सकता है, तो क्या यही वह बिजली या रोशनी है जिसका उल्लेख हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने मानवीय उत्पत्ति के संदर्भ में 'इस्लामी सिद्धांतों का दर्शन' में फ़रमाया है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 14 दिसंबर 2021 ई. में इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित निर्देश फरमाए। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: आप की बात इस सीमा तक तो ठीक है कि लैक्टोबैसिलस नामक जीवाणु शुक्राणु में मौजूद होते हैं, जो संदूषक के रूप में शुक्राणु में पाए जाते हैं, इनमें से कुछ में बहुत छोटे पैमाने पर बिजली पैदा करने की क्षमता भी होती है। लेकिन यह जीवाणु तो बहुत सी अन्य चीजों जैसे दही, विटामिन, जड़ी-बूटियों आदि में भी पाए जाते हैं। इसी तरह शरीर में बहुत से अन्य जीवाणु भी हैं जिनमें कुछ हृद तक बिजली पैदा करने की क्षमता मौजूद होती है जैसा कि प्रोबायोटिक सूक्ष्मजीव नामक पेट के जीवाणु जो भोजन पचाने में सहायता देते हैं। फिर यह बात भी याद रखने योग्य है कि यह बिजली भी इलेक्ट्रॉन की गति से पैदा होती है। जो कि एक भौतिक चीज है।

जबकि हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने मानवीय उत्पत्ति में आत्मा के प्रकट होने का जहां उल्लेख फ़रमाया है और अल्लाह तआला के साथ मानवीय संबंध का उद्देश्य और दर्शन बयान फ़रमाया है वहां वास्तव में उस स्वभाव को बयान फ़रमाया है जो मानवीय प्रकृति में निहित होती है और जिसके विषय में अल्लाह तआला ने 'फ़िततल्लाहिल्लती फ़तरन नासा अलैहा' (अर-रूम: 31) अर्थात यह अल्लाह की स्वाभाविक स्थिति है जिस पर उसने मनुष्यों को पैदा किया, के शब्दों में और आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने 'मा मिन मौलूदिन इल्ला यूल्दु अलल फ़ितरति, फा-अबवाहु युहव्विदानिही औ युनस्सिरानिही औ युमज्जिसानिही' (सहीह बुखारी, किताब अल-जनाइज़, अध्याय: यदि बच्चा मुसलमान होकर मर जाए तो क्या उस पर नमाज पढ़ी जाएगी) अर्थात हर बच्चा सही स्वभाव पर ही पैदा होता है फिर उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई या पारसी बना लेते हैं, के शब्दों में हमारा मार्गदर्शन फ़रमाया है। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: जिस प्रकार बेटे में पिता और माता का कुछ-कुछ चेहरा और सुगंध पाई जाती है उसी प्रकार आत्माएं जो अल्लाह तआला के हाथ से निकली हैं अपने सृष्टा की चरित्र और गुण से संक्षेप में कुछ

EDITOR SHAIKH MUJAHID AHMAD Editor : +91-9915379255 e-mail : badarqadian@gmail.com www.akhbarbadr.in	REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553	MANAGER : SHAIKH MUJAHID AHMAD Mobile : +91-9915379255 e-mail:managerbadrqnd@gmail.com www.alislam.org/badr
	Weekly BADAR Qadian Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 16 October 2025 Issue No. 42	

अंश रखती हैं यद्यपि सृजनशीलता के अंधकार और लापरवाही के प्रबल हो जाने के कारण कुछ आत्माओं में वह दैवीय रंग कुछ फीका सा हो जाता है लेकिन उससे इंकार नहीं हो सकता कि प्रत्येक आत्मा कुछ माला में वह रंग अपने अंदर रखती है और फिर कुछ आत्माओं में वह रंग दुरुपयोग के कारण विकृत दिखाई देता है मगर यह उस रंग का दोष नहीं बल्कि उपयोग करने के तरीके का दोष है।

(सुरमा-ए-चश्म-ए-आरिया, रूहानी खज़ाइन खंड 2 पृष्ठ 168-169)

आत्मा की वास्तविकता बयान करते हुए हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: आत्मा एक सूक्ष्म प्रकाश है जो उस शरीर के अंदर ही से पैदा हो जाता है जो गर्भ में पलता है। पैदा होने से मुराद यह है कि पहले गुप्त और अज्ञात होता है फिर प्रकट हो जाता है और आरंभ में उसका खमीर शुक्राणु में मौजूद होता है। निस्संदेह वह आसमानी अल्लाह के इरादे से और उसकी आज्ञा और उसकी इच्छा से एक अज्ञात स्वभाव वाले क्षेत्र के साथ शुक्राणु से संबंध रखता है और शुक्राणु का वह एक चमकदार और प्रकाशमय तत्व है। यह नहीं कह सकते कि वह शुक्राणु का ऐसा अंग है जैसा कि शरीर शरीर का अंग होता है मगर यह भी नहीं कह सकते कि वह बाहर से आता है या धरती पर गिरकर शुक्राणु के पदार्थ से मिलाप करता है बल्कि वह ऐसा शुक्राणु में छिपा होता है जैसा कि आग पत्थर के अंदर होती है। अल्लाह की किताब का यह आशय नहीं है कि आत्मा अलग तौर पर आसमान से उतरती है या वायुमंडल से धरती पर गिरती है और फिर किसी संयोग से शुक्राणु के साथ मिलकर गर्भ के अंदर चली जाती है। बल्कि यह विचार किसी प्रकार सही नहीं ठहर सकता। यदि हम ऐसा विचार करें तो प्रकृति का नियम हमें गलत सिद्ध करता है। (इस्लामी सिद्धांतों का दर्शन, रूहानी खज़ाइन खंड 10 पृष्ठ 322-323) आत्मा और शरीर का संबंध बयान करते हुए हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: आत्मा और शरीर का एक ऐसा संबंध है कि इस रहस्य को खोलना इंसान का काम नहीं। इससे अधिक इस संबंध के प्रमाण पर यह तर्क है कि गहन चिंतन से ज्ञात होता है कि आत्मा की मां शरीर ही है। गर्भवती स्त्रियों के पेट में आत्मा कभी ऊपर से नहीं गिरती बल्कि वह एक प्रकाश है जो शुक्राणु में ही गुप्त रूप से छिपा होता है और शरीर के विकास के साथ चमकता जाता है। (इस्लामी सिद्धांतों का दर्शन, रूहानी खज़ाइन खंड 10 पृष्ठ 321) हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) आगे फ़रमाते हैं: अल्लाह ने आदम में उसकी उत्पत्ति के साथ ही अपनी आत्मा फूंक कर उसकी प्रकृति को अपने साथ एक संबंध स्थापित कर दिया। सो यह इसलिए किया गया कि ताकि मनुष्य को स्वभावतः अल्लाह से एक संबंध उत्पन्न हो जाए।

(रिव्यू ऑफ रिलीजन्स खंड 1 नंबर 5, मई 1902 ई. पृष्ठ 178)

मनुष्य में आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से आत्मा के डाले जाने के विषय में हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं: 'सुम्मा अनशानाहु खलकन आखर, फतबारकल्लाहु अहसनुल खालेकीन'। इसका अनुवाद यह है कि जब हम एक उत्पत्ति को तैयार कर चुके तो उसके बाद हमने एक और उत्पत्ति से मनुष्य को पैदा किया। 'दूसरी' शब्द से यह समझाना अभिप्रेत है कि वह ऐसी बुद्धि से परे उत्पत्ति है जिसको समझना मनुष्य की बुद्धि से ऊपर है और उसकी समझ से बहुत दूर अर्थात् आत्मा जो ढांचे की तैयारी के बाद शरीर में डाली जाती है वह हमने मनुष्य में आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों तरह से डाल दी जो अज्ञात स्वभाव वाली है और जिसके संबंध में सभी दार्शनिक और इस भौतिक दुनिया के सभी अनुयायी हैरान हैं कि वह क्या चीज है... इसलिए अल्लाह तआला इस स्थान पर फ़रमाता है कि 'आत्मा' भी अल्लाह की उत्पत्ति है मगर दुनिया की समझ से ऊपर है।

(परिशिष्ट बराहीन-ए-अहमदिया भाग पांच, रूहानी खज़ाइन खंड 21 पृष्ठ 216-217)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आत्मा की वास्तविकता बयान करते हुए फ़रमाते हैं: वास्तव में आत्मा वह चीज है जिसके द्वारा किसी को विशिष्ट जीवन प्राप्त हो। इसलिए वह आत्मा जो पशु को अन्य चीजों से विशिष्ट कर रही

है। और वह आत्मा जिसके साथ मनुष्य अन्य पशुओं से विशिष्ट होता है इन दोनों पर 'आत्मा' शब्द का प्रयोग होता है। या वह आत्मा जो मनुष्य को अल्लाह से जोड़ देती है। इसलिए अल्लाह का कलाम भी एक आत्मा है जो मनुष्य को नया जीवन प्रदान करता है। (तफ्सीर-ए-कबीर खंड चौथा पृष्ठ 72)

इसलिए इन संदर्भों से सिद्ध होता है कि मनुष्य की शारीरिक और आध्यात्मिक उत्पत्ति के समय मानवीय ढांचे की तैयारी पर अल्लाह तआला की ओर से प्रकट होने वाली आत्मा बिल्कुल अलग चीज है और विभिन्न जीवाणुओं में पाई जाने वाली बिजली पैदा करने की क्षमता बिल्कुल और चीज है।

प्रश्न : ईद-उल-अज़हा की कुर्बानी कितने दिनों तक की जा सकती है? इस प्रश्न के बारे में दारुल इफ्ता से जारी होने वाले एक फतवे के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 21 मार्च 2022 ई. में निम्नलिखित निर्देश फरमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: ईद-उल-अज़हा की कुर्बानी कितने दिनों तक की जा सकती है, इस बारे में तो आप का फतवा ठीक है और मेरा भी यही दृष्टिकोण है कि सामान्य परिस्थितियों में कुर्बानी तीन दिन तक ही की जा सकती है लेकिन यदि कोई मजबूरी हो तो उसके बाद भी कुर्बानी की जा सकती है।

इसके अलावा मुझे तो आप के उस तर्क पर आपत्ति थी जो आप ने हज़रत खलीफतुल मसीह अर-राबे (अल्लाह तआला उन पर दया करे) के कथन से किया था। मेरे विचार में तो उस कथन में हुज़ूर (अल्लाह तआला उन पर दया करे) भी यही बयान फरमा रहे हैं कि कुर्बानी तीन दिनों तक ही की जा सकती है और हुज़ूर का यह कथन सामान्य परिस्थितियों के लिए है।

(संपादक की ओर से नोट: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज़ ने अपने उपर्युक्त पत्र में हज़रत खलीफतुल मसीह अर-राबे (अल्लाह तआला उन पर दया करे) के जिस कथन का उल्लेख फ़रमाया है, वह निम्नलिखित है):

"आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का तरीका यह था कि ईद का खुतबा ज्यादा लंबा नहीं किया करते थे और उसके बाद जल्द कुर्बानी के लिए घर रवाना हो जाया करते थे। इसमें एक बुद्धिमत्ता यह भी थी कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उस समय तक रोज़ा रखते थे जब तक स्वयं अपनी कुर्बानी के गोशत से वह रोज़ा न खोलें और इस सुन्नत को न समझने के कारण कुछ लोगों ने यह प्रथा बना ली है कि ईद के दिन अवश्य रोज़ा रखते हैं और जब तक निवृत्त न हों वह कुछ नहीं खाते लेकिन अभिप्राय कदापि यह नहीं है कि कुछ पहले खाना हराम हो जाता है मगर सुन्नत का अर्थ यह है कि जिसने कुर्बानी करनी हो, जिस दिन कुर्बानी करनी हो, उस दिन वह कुर्बानी के गोशत के प्राप्त होने से पहले रोज़ा रखे। कुर्बानी तो तीन दिन चलती है। तो यदि यह गलत अर्थ समझा गया तो इसका मतलब यह बनेगा कि कुछ लोग जिन्होंने चौथे दिन कुर्बानी करनी है वह चार दिन भूखे रहें"।

(खुतबात-ए-ताहिर (ईदैन) पृष्ठ 655, खुतबा ईद-उल-अज़हा दिनांक 28 मार्च 1999 ई.)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in